◆ जून, 2022 ◆ मूल्य: 35/-

अपने असर से ही आगे बढ़ रहा है योग

अवरोधों का सामना करती महिलाएं

गरीब आदिवासी परिवार से अब राष्ट्रपति पद की ओर

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से अनुप्राणित

अभ्युदय वात्सल्यम्

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

पिरोजशा गोदरेज
कार्यकारी चेयरमैन, गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड

उद्योग जगत के चमकते सितारे

भारतीय उद्योग जगत के चमकते सितारे पिरोजशा गोदरेज ने अपनी जिन्दगी में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। आने वाले चार सालों में कंपनी की बैलेंस शीट को 30 हजार करोड़ रुपये तक पहुंचाना उनके प्रमुख लक्ष्यों में से एक है

Invesco Mutual Fund

Market twists, turns, ups, downs.

Meet them all with a smile.

Invesco India Flexi Cap Fund

(An open ended dynamic equity scheme investing across large cap, mid cap, small cap stocks)

Invest in a flexible fund that responds to opportunities across market caps.

On the journey of life, the ability to adapt is key to surviving challenging situations. In financial markets too, where unpredictability is the norm, being flexible can help you move in the direction of opportunity. Pick a scheme with the flexibility to invest across large, mid and small caps so that no matter how the market twists and turns, you can keep moving towards your goals.

To invest, speak to your Mutual Fund Distributor or visit **invescomutualfund.com**

Call 1800 209 0007
SMS 'Invest to 56677

Follow us on

Suitable for investors who are seeking*

- capital appreciation over long term
- investments in a dynamic mix of equity and equity related instruments across largecap, midcap and small cap stocks

***Investors should consult their financial advisers if in doubt about whether the product is suitable for them.**

RISKOMETER

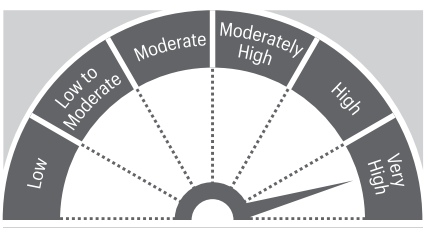

Investors understand that their principal will be at Very High Risk

Mutual Fund investments are subject to market risks, read all scheme related documents carefully.

अनुक्रमणिका

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से अनुप्राणित

अभ्युदय वात्सल्यम्

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका

■ वर्ष-14 ■ अंक-11 जून , 2022 ■ मूल्य- 35/-

संस्थापक सम्पादक : कृपाशंकर तिवारी
प्रधान सम्पादक : आलोक रंजन तिवारी
प्रबन्ध सम्पादक : शिवा तिवारी
विधिक सम्पादक : आशुतोष मिश्रा
लखनऊ ब्यूरो : हरिभजन शर्मा
विज्ञापन प्रबंधक - संजय सिंह
ग्राफिक डिजाइनर - अनमोल शुक्ल , अनिल मशालकर
फोटोग्राफर - हार्दिक रामगुड़े , राहुल पारकर

पत्राचार कार्यालय: आर - 2/608 , आरएनए प्लाजा , निकट आरएनए कॉर्पोरेट सेंटर , राम मंदिर रोड , गोरेगांव (प।) , मुंबई - 400104

एनसीआर ब्यूरो : 748, वास्टो महागुन मॉडर्न , सेक्टर - 78 , नोएडा - 201 305.

लखनऊ ब्यूरो : 101 , श्रद्धा विहार कॉलोनी , चिन्हट , लखनऊ - 226 028.

कृपा प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृपाशंकर तिवारी द्वारा रचना प्रिंटर्स , 25 , नेहा इंडस्ट्रियल एस्टेट , दत्तपाड़ा रोड , बोरिवली (पूर्व) , मुम्बई - 400066 से मुद्रित एवं आर - 2/608 , आरएनए प्लाजा , निकट आरएनए कॉर्पोरेट सेंटर , राम मंदिर रोड , गोरेगांव (प) , मुंबई - 400104 से प्रकाशित।

सम्पादक : आलोक रंजन तिवारी
पंजीकृत कार्यालय: आर - 2/608 , आरएनए प्लाजा , निकट आरएनए कॉर्पोरेट सेंटर , राम मंदिर रोड , गोरेगांव (प.) , मुंबई - 400104

दूरभाष: 022 -26771428 / 9167404760 / 7800611428
ई-मेल: kst@avmagazine.co.in
वेबसाइट : www.avmagazine.co.in

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रदर्शित समस्त पद अवैतनिक हैं। पत्रिका से संबंधित किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र मुंबई होगा।

आन्तरिक

योग
अपने असर से ही आगे बढ़ रहा है योग
पृष्ठ 06

उद्योग जगत/व्यक्तित्व
उद्यमियों के सरताज पिरोजशा गोदरेज
पृष्ठ 20

योग
योग क्या और क्यों
पृष्ठ 16

महिला जगत
अवरोधों का सामना करती महिलाएं
पृष्ठ 28

06 योग का उपयोग बढ़ाने की जरूरत

विशेष आलेख

32 आर्थिक और राजनैतिक बदलाव से गुजरता पड़ोसी देश

42 अग्निपथ: एक नई, क्रांतिकारी और साहसिक रक्षा भर्ती योजना!

50 गरीब आदिवासी परिवार से अब राष्ट्रपति पद की ओर

56 असम: 4 लाख लोग प्रभावित

योग अनेक समस्याओं का स्वयं में समाधान है

आलोक रंजन तिवारी

योग शब्द का सर्वाधिक तर्क संगत एवं मूल अर्थ है– जोड़ने का कार्य। अर्थात् जिसके द्वारा जोड़ने का कार्य सम्पन्न हो, वह योग है। योग शब्द के अन्य अनेक अर्थ भी हैं। जैसे– संयोग, सम्बन्ध, सम्पर्क, युक्ति, उपाय, नियम, विधान, सूत्र, उपयुक्तता, परिणाम, कौशल, गाड़ी, वाहन, कवच,लाभ, धन, औषध, व्यवसाय, ध्यान, संगति, दूत, सुभीता, सुयोग, प्रयोग, चित्तवृत्ति का निरोध, मोक्ष का उपाय, प्रेम, मेल– मिलाप, वैराग्य, शुभकाल, नाम, नाव, साम आदि चार प्रकार के उपाय, सहयोगिता, उत्सव, पर्व, सम्पत्ति का लाभ और वृध्दि, विशिष्ट तिथियों, वारों और नक्षत्रों का निश्चित नियम से पड़ना, अष्टांग योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का अंतर्भाव है, हठयोग आदि। योग शब्द का अर्थ, क्षेत्र और प्रयोग अतीव विशद् है, व्यापक है। मानव जीवन को शांत, प्रसन्नचित्त, प्रेमपूर्ण एवं सर्वरूपेण सुसमृद्ध एवं तेजस्वी बनाने का सर्वाधिक उपयुक्त एवं सबल माध्यम है– योग। अपने अंतस में अनंत की गहराइयों एवं असीमानन्द की प्राप्ति हेतु योग महान शैली है, विधा है, ईश्वर– प्राप्ति का एक प्रमुख प्रशस्त मार्ग है – योग।

सामान्य जन भी योग का आश्रय लेकर स्व जीवन को तेज, ओज, सुबुद्धि एवं चित्त की स्थिरता व प्रसन्नता के माध्यम से पूर्णतया सुखी व सुवासित बना सकते हैं। योग ब्रम्हांड की अनमोल ज्ञान सम्पदा है जिसे प्राप्त करना मानव मात्र का परम कर्तव्य है और हमें मानव जीवन प्राप्त करने के कारण इसे प्राप्त करना ही चाहिए। योग के माध्यम से हमें वह दिव्य चरित्र प्राप्त हो सकेगा जो हमारे लिए सुशोभनीय है, हमारे महनीय मानवीय गरिमा के अनुरूप है। योग के माध्यम से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व में वह दिव्य आत्मिक चेतना का संचार हो सकेगा, जिसके माध्यम से विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना बलवती होगी और इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में प्रेम, शांति, सद्भाव एवं भाईचारे का साम्राज्य स्थापित हो सकेगा।

योग मानव जीवन एवं संसार की अनेक समस्याओं का स्वयं में समाधान है। यौगिक दृष्टि से विचार एवं कर्म दिव्य होते हैं। अन्ततोगत्वा हमारी दिव्यता के आलोक से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशमान हो सकेगा, धरती पर स्वर्गानुभूति हो सकेगी। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विश्व के कल्याणार्थ 21 जून को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित कराकर सम्पूर्ण विश्व के व्यापक हित और कल्याण हेतु अभिनंदनीय कार्य किया है और मानवता को महती गरिमा प्रदान करने वाले इस योग प्रतिष्ठा के कार्य हेतु आप सदैव याद किये जायेंगे। श्री. मोदी स्वयं में यौगिक जीवन का आनंद प्राप्त करने वाले विलक्षण राज नेता हैं, उदारमना हैं, विश्व प्रेमी हैं, मानवता के उद्धारक हैं और वसुधैव कुटुम्बकम् के महान साधक – उपासक हैं, तभी तो सम्पूर्ण विश्व को आनंदित करने का सपना देखे। उनका सपना साकार हो रहा है और सम्पूर्ण विश्व योग के प्रति श्रद्धावान हो रहा है, आचरणशील हो रहा है।

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाकर हमने प्रतीक रूप में योग को स्वीकार किया है परन्तु इसकी पूर्णता और पूर्ण चरितार्थता यह है कि हम अपने जीवन में, नित्य प्रति की दिनचर्या में इसे शामिल करें, इसके उदात्त भावो में अवगाहन करें, स्वजीवन को आलोकित करें और सम्पूर्ण मानवता को महिमामण्डित करते हुए विश्व को योगभूमि बना दें। श्री मोदी जी के पुण्य प्रयासों से विश्व ने अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर योग किया। हमें, सबको जोड़ते हुए श्री मोदी के इस महामानवीय महाभियान को सुसफल बनाने का पूर्ण प्रयास करना होगा, तभी जाकर विश्व को प्रेमपूर्ण, शांतिपूर्ण एवं सौहार्द्र पूर्ण बनाने का विश्वनेता का सपना पूरा होगा।

मानवता एवं संपूर्ण विश्व के व्यापक हित में श्री मोदी की विशेष पहल के फलस्वरूप विश्व को प्राप्त इस ऐतिहासिक महान जन कल्याणकारी शुभ अवसर ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की वैश्विक जन कल्याणकारी भावना, सर्वे भवन्तु सुखिनः–सर्वे संतु निरामया की उदात्त सोच एवं उनके वैश्विक नेतृत्व क्षमता को प्रकट किया है, प्रदर्शित किया है, प्रमाणित किया है। इस महान कार्य के मूल में श्री मोदी की महती कर्मयोगी भूमिका ने उन्हें विश्व नेता के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है, प्रधानमंत्री मोदी सच्चे अर्थों में विश्व नेता हैं।

◆◆◆

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाकर हमने प्रतीक रूप में योग को स्वीकार किया है परन्तु इसकी पूर्णता और पूर्ण चरितार्थता यह है कि हम अपने जीवन में, नित्य प्रति की दिनचर्या में इसे शामिल करें।

एसआईपी.

सेहत के लिए नियमित योगा करने जैसा लाभकारी

अधिक जानकारी के लिए, अपने म्यूच्युअल फ़ंड वितरक / पंजीकृत निवेश सलाहकार से संपर्क करें या 73587 12345 पर मिस्ड कॉल दें.

एसआईपी - सिस्टेमैटिक इंवेस्टमेन्ट प्लान

म्यूच्युअल फ़ंड्स में निवेश करने के लिए, एककालिक अपने ग्राहक को जानिए (KYC) की अपेक्षाओं को पूरा करने की प्रक्रिया के बारे में अधिक जानकारी हेतु https://www.hdfcfund.com/information/key-know-how पर विजिट करें. निवेशकों को केवल रजिस्टर्ड म्यूच्युअल फ़ंड्स के साथ व्यवहार करना चाहिए, जिनके विवरण का सत्यापन सेबी की वेबसाइट (www.sebi.gov.in/intermediaries.html) पर किया जा सकता है. किसी पूछताछ, शिकायत तथा समस्या के समाधान के लिए निवेशक एएमसीज़ तथा/या निवेशक संपर्क अधिकारी से संपर्क कर सकते हैं. इसके साथ ही, अगर निवेशक एएमसीज़ द्वारा दिए गए समाधान से संतुष्ट न हों तो https://scores.gov.in पर भी शिकायत दर्ज कर सकते हैं. स्कोर्स पोर्टल निवेशकों को सेबी को ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने तथा तत्पश्चात इसकी स्थिति को देखने की सुविधा प्रदान करता है.

An Investor Education Initiative By

HDFC MUTUAL FUND

BHAROSA APNO KA

म्यूच्युअल फ़ंड निवेश बाज़ार के जोखिमों के अधीन हैं, योजना से जुड़े सभी दस्तावेज़ों को ध्यान से पढ़ें.

किसी पूर्वाग्रह में इससे दूरी बनाने का अर्थ होगा, एक अच्छी चीज से अकारण मुंह फेर लेना

अपने असर से ही आगे बढ़ रहा है योग

संयुक्त राष्ट्र ने 2014 में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव पास किया। 177 सदस्य देशों ने इसे बिना वोटिंग के मान लिया। ऐसा पहली बार हुआ जब किसी देश की पहल को यूएन असेंबली ने तीन महीने के भीतर मान लिया। इस टिप्पणी के साथ कि योग मानव स्वास्थ्य और कल्याण की दिशा में संपूर्ण नजरिया है। आज योग इंडस्ट्री 5 लाख करोड़ रुपये का दायरा पार कर चुकी है। भारत में

इसका आकार 50,000 करोड़ रुपये के आसपास है। केंद्र की मेक इन इंडिया रिपोर्ट के मुताबिक, करीब 5.32 लाख करोड़ की इस ग्लोबल इंडस्ट्री में अकेले अमेरिका की हिस्सेदारी 1.17 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा है। वहां 3 करोड़ 60 लाख से ज्यादा लोग योग करते हैं। योग की इतनी लोकप्रियता और स्वीकार्यता बेवजह नहीं है। शरीर और मन पर पड़ने वाले इसके पॉजिटिव असर ने बाकायदा वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी तरफ खींचा है।

धर्म और अध्यात्म

जर्मनी की डॉ. डागमार वूयास्तिक भारत विद्या (इंडोलॉजी)में डॉक्टरेट हैं। वह भारत की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर रिसर्च कर रही हैं। यूरोपीय संघ की वैज्ञानिक शोध परिषद ने उन्हें 14 लाख यूरो का फंड दिया है। उनकी तीन सदस्यों वाली टीम 2015 से 'औषधि, अमरत्व और मोक्ष' नाम के प्रॉजेक्ट पर काम कर रही है। यूरोपीय संघ चाहता है कि इस विषय की वैज्ञानिक विवेचना की जाए। दुनिया भर में योग का उपयोग शारीरिक और मानसिक बीमारियों से निपटने के लिए हो रहा है। बड़ी बात यह कि योग में दिलचस्पी इन पांच सालों में ही नहीं बढ़ी है। अमेरिका और यूरोप में पिछले 20 - 25 सालों में इसने लोगों के दिलोदिमाग में अपनी जगह बनाई है। फिर चाहे यह योग के रूप में हो या इसी के एक रूप 'माइंडफुलनेस' के रूप में। माइंडफुलनेस पश्चिम में जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुकी है। इसमें चित्त को शांत करने की प्रैक्टिस की जाती है। मन को अतीत के विचारों से हटाकर एक जगह केंद्रित किया जाता है। चेतना को जगाकर मन में चल
रही हलचल का गवाह बना जाता है, उसे अनुभव किया जाता है। सांस और शारीरिक संवेदनाओं के बारे में जागरूकता को बढ़ाया जाता है। जगह-जगह आपको इसके ट्रेनिंग सेंटर दिख जाएंगे। और गौर कीजिए, इसे धार्मिक उपक्रम की तरह नहीं, शारीरिक और मानसिक क्रिया के तौर पर अपनाया गया है। यह मेडिटेशन के बहुत करीब है। इधर, भारत में 21 जून की तारीख करीब आते ही यह बहस जोर पकड़ लेती है कि योग हिंदू धर्म से जुड़ा उपक्रम है, इसलिए सारे धर्म इसे नहीं अपना सकते। तर्क दिया जाता है कि योग के एक हिस्से प्राणायाम में ओम का उच्चारण जरूरी है, इसलिए हिंदू धर्म के अलावा दूसरे धर्म ऐसा नहीं कर सकते। धर्म की कोई मान्य परिभाषा नहीं है। इसके एक पहलू पर मूल सहमति है कि यह जीने का तरीका है। कुछ नियम हैं, अनुशंसाएं हैं जो समाज को जीने की दिशा देते हैं। अलग-अलग धर्म हैं, इसलिए अलग-अलग नियम हैं। अध्यात्म इससे इस मायने में अलग है कि इसे खुद को जानने – समझने की इच्छा और तलाश के उपक्रम के रूप में देखा जाता है। लेकिन, योग का विस्तार धर्म और अध्यात्म दोनों में है। योग की सबसे प्रचलित परिभाषा पतंजलि योग सूत्र की रही है। पतंजलि व्यापक तौर पर योग दर्शन के संस्थापक माने जाते हैं। इनका योग बुद्धि के नियंत्रण की प्रणाली है। योग को उन्होंने चित्त की वृत्ति का निरोध कहा है। यानी मन की चपलता को बांधना/ साधना। इसके अष्ठांग यानी आठ अंग सुझाए हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा (एकाग्रता), ध्यान और समाधि। योग को शरीर, मन और आत्मा के जोड़ के रूप में भी प्रचारित किया जाता है। यह सही है कि योग दिवस पर जो योग कराया जाता है, उसमें मानसिक पहलू से ज्यादा जोर शारीरिक व्यायाम पर ही होता है। मानसिक

क्रिया यानी मेडिटेशन पर बहुत कम बात होती है, जबकि इसके बगैर योग की कल्पना अधूरी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में कहा था- योग भारत की प्राचीन परंपरा का अमूल्य उपहार है। यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है, विचार, संयम और संतुष्टि प्रदान करने वाला है और स्वास्थ्य तथा भलाई के लिए समग्र दृष्टिकोण को प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम नहीं, अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज का विषय है। योग को धार्मिक उपक्रम समझने के पीछे एक वजह यह हो सकती है कि इसे उस पार्टी की सरकार में ज्यादा प्रमोट किया गया, जिसका दर्शन हिंदुत्व पर टिका है। लेकिन, मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए दुनिया भर में इसका उपयोग वर्षों से हो रहा है। और अगर किसी को लगता है कि योग से उसे शारीरिक, मानसिक या मनोवैज्ञानिक लाभ हो रहा है तो इसमें बुराई क्या है? क्यों इसे धर्म या राजनीति के चश्मे से देखा जाए?

सर्व स्वीकार्यता

धर्म का मूल वैसे भी अनुशासित जीवन पद्धति है और योग अनुशासन सिखाता है। अगर यह लोकप्रिय हो रहा है तो अपने असर के कारण हो रहा है, किसी राजनीतिक या धार्मिक प्रभाव के कारण नहीं। आज दुनिया भर में योग पर कार्यक्रम होंगे। योगासन करते वीवीआईपीज की तस्वीरें दिखेंगी। सैकड़ों मुल्क अगर एक दिन, एक ही क्रिया में शामिल होंगे तो यह योग की स्वीकार्यता का ही प्रमाण होगा। कोई चीज इतने व्यापक स्तर पर स्वीकार्य तभी हो पाती है जब उससे सभी को कुछ न कुछ मिल रहा हो। योग ने दुनिया को शारीरिक, मानसिक जागृति के मंच पर एक सूत्र में पिरोया है। इसका खुले दिल से स्वागत किया जाना चाहिए।

◆◆◆

योग का उपयोग बढ़ाने की जरूरत

– डॉ. मोनिका शर्मा

आज की आपाधापी भरी जीवन शैली में योग तनाव से जूझने और सहज रहने की शक्ति देता है, जो कि मन-मस्तिष्क के स्वास्थ्य को सहेजने के लिए बेहद आवश्यक है।

आज यदि भारत के साथ दुनिया के तमाम देशों में योग की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है तो इसीलिए कि योग संपूर्ण स्वास्थ्य की सौगात देने वाली प्रक्रिया है। यह केवल शारीरिक व्यायाम भर नहीं, बल्कि एक ऐसी स्वस्थ जीवन शैली है जो मन का स्वास्थ्य भी संवारती है। योग के अलावा दुनिया में ऐसा कोई व्यायाम नहीं जो इंसान को आत्मिक स्तर पर भी परिष्कृत करता हो। हमारे देश में शुरू से ही योग को एक आध्यात्मिक प्रक्रिया माना गया है। जो शरीर, मन और आत्मा को जोड़ते हुए सकारात्मक सोच और स्वस्थ जीवन की राह सुझाती है। मौजूदा समय में न केवल मानसिक रोगियों के बढ़ते आंकड़े, बल्कि आम जन में भी जिस तरह आक्रामकता और विचार एवं व्यवहार में ठहराव की कमी अपनी पैठ बना रही है, उसे देखते हुए योग को अपनाने की दरकार है। बीते कुछ बरसों में भारत में ही नहीं दुनिया भर में योग करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी है और इसका एक कारण संयुक्त राष्ट्र की ओर से 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित करना और दूसरा, दुनिया भर में यह धारणा पुख्ता होना है

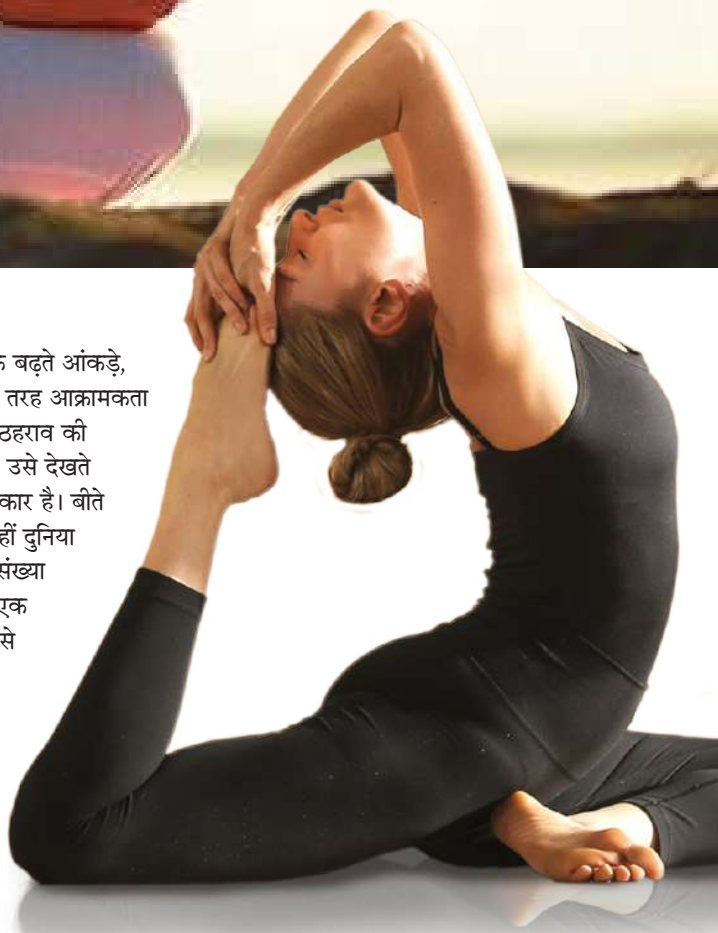

कि आज के प्रतिस्पर्धी और तनाव भरे जीवन में योग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी है। योग दिवस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने की शुरुआत 21 जून, 2015 से हुई, लेकिन यह भारतीय संस्कृति और संस्कारों का सदा से ही हिस्सा रहा है। इसके जरिये सकारात्मक जीवनशैली को सबसे ऊपर रखा गया। योग भारत का एक बड़ा आविष्कार है। यह संपूर्ण मानवता के लिए है। स्वास्थ्य सहेजने की इस कला को दुनिया के हर हिस्से में बसे लोगों ने अपनाया है। सुखद यह है कि अब पूरी दुनिया में इस खास दिन को योग के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए मनाया जाता है, लेकिन आवश्यक केवल यह नहीं है कि योग दिवस पर योग की महत्ता से परिचित हुआ जाए, बल्कि यह भी है कि उसे दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाए। आज की आपाधापी भरी जीवन शैली में योग तनाव से जूझने और सहज रहने की शक्ति देता है, जो कि मन मस्तिष्क के स्वास्थ्य को सहेजने के लिए बेहद आवश्यक है। एक ओर आधुनिक जीवनशैली और खानपान शारीरिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचा रहे हैं तो दूसरी ओर काम का दबाव और घर से दफ्तर तक अनगिनत उलझनों से जूझता इंसानी मन बीमार हो रहा है।

यह स्थिति वाकई चिंतनीय है, क्योंकि नागरिकों की मानसिक सेहत सामाजिक जीवन की बेहतरी से जुड़ा अहम पहलू है। आमजन की सोच की स्थिरता और सकारात्मकता समाज में सुरक्षित और सहज परिवेश बनाने के लिए जिम्मेदार होती है। कहना गलत नहीं होगा कि चाहे खुद को बेहतर ढंग से समझने की बात हो या घर-दफ्तर और सड़क पर सामने आने वाली आम सी परिस्थितियों को संभालने का मामला, मन का सहज रहना जरूरी है। नियमित योगाभ्यास से यह सहजता पाई जा सकती है। यही वजह है कि योग को शरीर को निरोगी और मन को कुदरती तरीके से समृद्ध करने की कला माना जाता है। चिकित्सक से लेकर योग प्रशिक्षक तक सभी यह मानने लगे हैं कि मन का शांत और स्वस्थ होना जीवन के हर क्षेत्र में बेहतरी का आधार बन सकता है। ड्यूक यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन के मुताबिक ध्यान एवं आसन, दोनों ही रूपों में योग का मानसिक समस्याओं पर बेहद सकारात्मक प्रभाव होता है। इस शोध के अनुसार मानसिक सेहत के लिए सप्ताह में कम से कम तीन बार, 30 मिनट तक योग करना चाहिए। कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी का एक अध्ययन बताता है कि योग तनाव से जुड़े हार्मोन के स्तर को घटाता है।

ऐसे शोध और अध्ययन योग को लोकप्रिय बनाने में सहायक बनने के साथ उसकी

क्रोध और अवसाद जैसी व्याधियां भी घेर रही हैं ऐसे में योग बच्चों से लेकर बुजुर्गो तक, सभी की सेहत सहेज सकता है।

उपयोगिता को प्रमाणित करने का काम कर रहे हैं। हमारे समाज और परिवारों में आए दिन हो रही घटनाएं बताती हैं कि अब धैर्य और ठहराव नहीं बचा है। रिश्तों को संभालने की बात हो या रीत रहे मन के चलते खुद बीमार होने का मसला, क्षणिक आवेश में किसी की जान ले लेने से लेकर कामुक वृत्तियों के चलते शोषण की घटनाएं अब आम हैं।

आज की अनियमित जीवन शैली और भागमभाग भरी जिंदगी बहुत कुछ छीन रही है। इस भाग दौड़ में जीवन अस्त-व्यस्त और मन दिशाहीन सा है। विशेषज्ञ मानते हैं कि मन की शक्ति को सही दिशा न दी जाए तो 95 फीसद मानसिक शक्ति व्यर्थ चली जाती है। नकारात्मक विचार दिलो-दिमाग को घेरने लगते हैं। हमारा असुरक्षित और असहिष्णु होता परिवेश बताता है कि व्यावहारिक रूप से यही हो भी रहा है। इतना ही नहीं कम उम्र में ही लोग माइग्रेन, अस्थमा, मधुमेह, रक्तचाप और मोटापा जैसी कई गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं। साथ ही मानसिक सेहत से जुड़ी परेशानियां जैसे अनिद्रा, भूलने की बीमारी, भय, शक, क्रोध और अवसाद जैसी व्याधियां भी घेर रही हैं। ऐसे में योग बच्चों से लेकर बुजुर्गो तक, सभी की सेहत सहेज सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2020 तक भारत में अवसाद दूसरा सबसे बड़ा रोग होगा। पहले से ही स्वास्थ्य सेवाओं के जर्जर ढांचे से जूझ रहे देश में मानसिक रोगियों की इतनी संख्या का उपचार भी क्षमताओं से परे है। ऐसे में योग के जरिये इन आंकड़ों को बहुत हद तक कम किया जा सकता है। योग का एक अहम पक्ष यह भी है कि यह इंसान को प्रकृति से जोड़ता है। भौतिकवादी सोच के बजाय आत्मिक उन्नति का मार्ग सुझाता है। इस प्रक्रिया का पहला कदम ही प्रकृति से जुड़ते हुए सकारात्मक जीवन शैली अपनाना है। इसमें खान- पान से लेकर विचार और व्यवहार तक संतुलन और समन्वय बनाने की कोशिश की जाती है। योग संतुलित जीवन चर्या का आधार है और ऐसी जीवनचर्या अपनाना अपने आप में कई शारीरिक मानसिक ही नहीं आत्मिक समस्याओं का भी हल है।

मन की वृत्तियों को अनुशासित करके अपराध के आंकड़ों में कमी भी लाई जा सकती है। इतना ही नहीं योग के जरिये मानसिक आरोग्यता और मन का ठहराव हासिल करने की जीवनशैली देश के जन-संसाधन को सहेजने का भी माध्यम बन सकती है। योग को इस रूप में देखा जाना समय की मांग है कि इसे अपनाकर मन-मस्तिष्क का स्वास्थ्य ही नहीं, सामाजिक मूल्य भी सहेजे जा सकते हैं। सोच-समझ को सही दिशा देना आमजन की जिंदगी में ही नहीं समाज-परिवार और देश में भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

(लेखिका सामाजिक मामलों की विश्लेषक हैं)

◆◆◆

सुरक्षित गोस्वामी

आसन - प्राणायाम भर नहीं है योग

भी तर मुड़कर अपने स्वरूप से जुड़ना ही योग है। योग में हम अपने शुद्ध स्वरूप को जान कर उसी भाव में स्थित हो जाते हैं। सुख-दुख, मान - अपमान लाभ - हानि राग द्वेष का असर साधक पर नहीं पड़ता। भयंकर से भयंकर विपरीत परिस्थिति भी योगी को तिल भर भी हिला नहीं पाती। योग आत्मा में स्थित हो जाने का नाम है। मुक्ति , मोक्ष, कैवल्य, आत्म साक्षात्कार आदि योग के ही अनेक नाम हैं। योग कहते ही आत्मा तक पहुंचने की यात्रा का वर्णन उसमें शामिल हो जाता है। असलियत में जब हम अपने आत्म स्वरूप में स्थित होते हैं, तब योगी कहलाते हैं। योग मुक्ति मार्ग के साथ - साथ एक जीवन दर्शन भी है। लेकिन आज चार आसन सीखकर कोई योगी, योगाचार्य, योग गुरु कहलाने लगता है। इससे योग की गरिमा नहीं बढ़ रही है,बल्कि योग की उस उच्च स्थिति को धूमिल किया जा रहा है। आज हम योग के नाम पर कुछेक कसरतों को बढ़ावा दे रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि आने वाली पीढ़ियां आसन - प्राणायाम को ही वास्तविक योग मानने लगें।

जीवन की संभावनाएं

आज कुछ लोग धन कमाने के लिए योग का व्यापारीकरण करने पर उतारू हैं। अब से पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। जिस तरह ज्योतिष के कारोबारीकरण से लोगों का विश्वास उससे उठने लगा , धर्म के व्यवसायीकरण से उसके प्रति श्रद्धा कम होने लगी , उसी तरह योग का व्यावसायिक प्रयोग बढ़ने से लोगों का इससे मोहभंग हो सकता है। योग से बीमारियाँ दूर होती हैं , लेकिन योग केवल बीमारियों को दूर करता है ऐसा प्रचारित करना उचित नहीं है। योग तो मुक्ति का मार्ग है। साधक जब मुक्ति के मार्ग पर चलता है तो उसका तन व मन अपने आप ही स्वस्थ हो जाता है। लेकिन योग जब पश्चिमी देशों में गया तो उसके आसनों को ऐसे पेश किया गया जैसे वह सेक्सी बॉडी बनाने का नुस्खा हो। नतीजा यह निकाला कि योग से आध्यात्मिकता दूर हो गई और योग **योगा** बन गया। जबकि योग अच्छे सच्चे मानव का निर्माण करता है और योगा केवल बीमारी को दूर कर शरीर का सुडौल बनाने में मदद करता है।

योग से आध्यात्मिकता निकल जाती है तो वह व्यायाम की श्रेणी में आ जाता है। ऐसा नहीं है कि जो कठिन से कठिन आसन कर ले वह बड़ा योगी हो गया। वैसे तो एक जिमनास्ट की कमर ज्यादा लचीली होती है। वह रस्सी पर एक पैर से चलने में सक्षम है। पर वह बड़ा योगी नहीं बन सकता, क्योंकि वह केवल शरीर के स्तर पर टिका है। आत्मा का ज्ञान वहाँ दूर - दूर तक नहीं। हमारे ऋषियों ने ऐसी अनेक खोजें कीं, जिनसे मानव जीवन की संभावनाओं का विकास किया जा सके। उनके सामने सवाल था कि शरीर का रख-रखाव कैसे किया जाए? इसके लिए ऋषियों ने गहन चिंतन किया और पाया कि सभी पशु- पक्षी अपने शरीर को किसी एक आकृति के माध्यम से स्वस्थ बनाए रखते हैं। सांप को देखकर सर्पासन, मछली को देखकर मत्स्यासन, बगुले को देखकर बकासन, गाय को देखकर गोमुखासन, पेड़ को देखकर वृक्षासन, पर्वत को देखकर पर्वतासन, कमल को देखकर पद्मासन आदि अनेक आसनों का निर्माण किया।

इन आसनों के क्रम में मनुष्य जब इन प्राकृतिक आकृतियों से गुजरेगा तो उसका शरीर ऊर्जावत और निरोगी बना रहेगा। फिर उन्होंने अनुसंधान किया कि कौन से आसन शरीर के किस हिस्से पर असर डालते हैं और उनसे कौन से रोग ठीक होते हैं। इस प्रकार योग का वैज्ञानिक पक्ष प्रस्तुत हुआ। आसन, योग का स्थूल और बाह्य भाग है। यह शरीर को स्वस्थ व निरोग बनाए रखता है। ऋषियों ने अनुभव किया कि शरीर को चलाने के लिए एक प्राण शक्ति कार्य करती है, जिसका हमारी सांस से सीधा संबंध है। उन्होंने पाया कि जो पशु धीरे- धीरे सांस लेते हैं जैसे कछुआ, उनकी उम्र ज्यादा होती है और जो जल्दी-जल्दी सांस लेते हैं जैसे कुत्ता, उनकी उम्र कम होती है। इसलिए ऋषियों ने प्राणायाम का निर्माण किया, जिससे जीवनी शक्ति स्वस्थ रह सके। आसन का उद्देश्य मात्र शरीर को स्वस्थ करना नहीं, बल्कि शरीर की सभी हलचलों को थामकर उसको ध्यान के लिए तैयार करना है। ऐसे ही प्राणायाम का उद्देश्य केवल बीमारियाँ दूर करना नहीं, बल्कि चक्रों व कुण्डलिनी शक्ति को जगाकर चित्त में पड़े हुए संस्कारों का नाश करना है, जिससे साधक का चित्त शुद्ध हो और उसकी आध्यात्मिक यात्रा आगे बढ़े।

दिनचर्या का हिस्सा

हमारी कई इंद्रियाँ हमेशा बाहर की ओर दौड़ती रहती हैं। आँखें रूप निहारती हैं। कान शब्द सुनने में लगे रहते हैं। जीभ बोलने और खाने में उलझी रहती है। नाक गंध और त्वचा कोमल, कठोर, ठंडा, गरम के अनुभव में लगी रहती है। इन बाहर भागती इंद्रियों से ऊर्जा भी बाहर की ओर बह जाती है, तो इसके लिए प्रत्याहार की साधना का वर्णन किया। साथ ही हर व्यक्ति का चित्त अस्थिर रहता है। इसके लिए धारणा की साधना बताई, जिससे चित्त शरीर के अंदर स्थित चक्रों पर एकाग्र हो सके। भागते हुए मन को साधने व आत्मा की यात्रा करने के लिए ध्यान का अभ्यास बताया। समाज में कैसे रहें, इसके लिए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, इन यमों का अभ्यास बताया। साथ ही अपने भाव को शुद्ध करने के लिए शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान, इन नियमों की चर्चा की।

ये बातें हमने अष्टांग योग को ध्यान में रखते हुए कहीं। लेकिन योग की अनेक विधाएँ हैं, जिनमें कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग आदि प्रमुख हैं। इनमें से किसी भी एक मार्ग पर चल कर व्यक्ति सुख, शांति और अच्छा स्वास्थ्य पा सकता है। आज योग दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हमें योग को खाने और सोने की तरह ही अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना है। फिर देखिएगा, जीवन एक उत्सव हो जाएगा। ◆◆◆

AJMERA
Built on Trust

100 acres interconnected, integrated new age living destination in the heart of Mumbai city

AJMERA
i-LAND
WHERE FUTURE LIVES

WADALA (E)

2,3 & 4 BHK Available

SPRAWLING SPORTS ACADEMY | INDEPENDENT CLUBHOUSES | UPCOMING SCHOOL AND COMMERCIAL AVENUES

Planned by the world renowned New York based architects, Skidmore, Owing & Merrill LLP (SOM), the designers of Dubai's Burj Khalifa

SITE: AJMERA i-LAND, NEXT TO I-MAX BHAKTI PARK, WADALA (E) • E: iland@ajmera.com • W: www.ajmera.com

Visit us to know more or call:
9699 095 095

49 years of fulfilling dreams | 40,000 homes of happiness | 45 million sq. ft. of development • Mumbai | Pune | Bangalore | Ahmedabad | Bahrain

Disclaimer: All the specifications, designs, facilities, dimensions etc. are subject to the approval of the respective authorities. The developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or any obligation. Images are for representative purpose only.

Project funded by HDFC ICICI Bank

Follow Ajmera Realty on

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
- मुंबई विश्व विद्यालय

भारतीय योग परंपरा और कबीर

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर के काव्य में भक्ति पर विचार करते हुए लिखा था कि "कबीर की भक्ति योग के क्षेत्र में प्रेम का बीज पड़ने से अंकुरित हुई थी।" कहने का आशय यह है कि उनकी भक्ति का मूलाधार योग ही था। वस्तुतः कबीर के काव्य में योग, प्रेम, भक्ति इत्यादि अंतर्मुक्त हैं।

कबीर भक्तिकाल के संत कवियों में श्रेष्ठतम स्थान रखते हैं। इन्होंने अपने काव्य में भारतीय योग दर्शन का समुचित प्रयोग किया। योग तन, मन, आत्मा समेत चेतना की सभी स्थितियों के उन्नयन और परिमार्जन का एक सशक्त माध्यम है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर के काव्य में भक्ति पर विचार करते हुए लिखा था कि "कबीर की भक्ति योग के क्षेत्र में प्रेम का बीज पड़ने से अंकुरित हुई थी।" कहने का आशय यह है कि "उनकी भक्ति का मूलाधार योग ही था। वस्तुत: कबीर के काव्य में योग, प्रेम, भक्ति इत्यादि अंतर्मुक्त हैं।" उनमें एक विचित्र प्रकार की समरसता है। यही कारण है कि कोई उन्हें ज्ञानी कहता है तो कोई भक्त अथवा संत। योग भारत की संपूर्ण विश्व को अद्भुत देन है। योग दर्शन में योगश्च चित्तवृत्ति निरोध: कहकर योग को परिभाषित किया गया है। अर्थात मन की वृत्तियों का शांत हो जाना ही योग है। कबीर न केवल योग की महिमा से सुरिचित थे अपितु अपने काव्य द्वारा उसे नवीन प्रतिष्ठा भी दिलाते हैं। वे सहज योग की प्रतिष्ठा द्वारा उसे जनसुलभ बनाते हैं। कबीर को योग संबंधी सूक्ष्म विषयों का ज्ञान था। वे अपने काव्य में जिस स्वानुभूत सत्य का उद्घाटन करते हैं वह योगानुभव पर ही आधारित है। कबीर परिपक्व ज्ञान और भक्ति में कोई तात्विक अंतर नहीं मानते। क्योंकि यह ज्ञान शुद्ध चित्त होने के उपरांत ही प्राप्त होता है जो योग द्वारा ही संभव है। कबीर योग साधना के क्षेत्र में गुरु की भूमिका को विशेष महत्व देते है। कबीर की दृष्टि में मनुष्य योग साधना द्वारा अहंकार रहित और सांसारिक विषयों से उदासीन हो जाता है। यह आत्मिक पवित्रता ही उसे अच्छे कार्यों और ईमानदार प्रयासों की ओर उन्मुख करती है। कबीर का योग चिंतन इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि उसके माध्यम से वे मनुष्य के भीतर की अनंत संभावनाओं को टटोलकर जगाने और सक्रिय करने का भी उपक्रम है। कबीर के लिए कुंडलिनी का जागना प्रकारांतर से मनुष्य की सुषुप्त आंतरिक शक्ति का जागना है। बिना जाने न तो मनुष्य स्वयं को विकसित कर सकता है और न ही समाज अथवा राष्ट्र को। योग हमें जगा कर अपनी शक्तियों के

सदुपयोग का मार्ग प्रशस्त करता है। वह मनुष्य के मन को शुध्द, सात्विक और निश्छल बनाता है। यदि मनुष्य का मन बदल जाए तो समय और समाज के बदलने में देर नहीं लगेगी। कबीर योग साधना द्वारा मानव-मन का परिष्कार करना चाहते हैं। इस दृष्टि से ही उसे लोककल्याण से जोड़ा जा सकता है। पेशे, रहन-सहन और सामाजिक हैसियत से कबीर इस देश के ठेठ आम आदमी थे। वे बुनकर थे और कामगार होने का तनिक भी मलाल उन्हें नहीं था। उनकें चिंतन के केंद्र में जनसाधारण ही था। फलत: वे जनसामान्य के अनुरूप योग और भक्तिमार्ग का प्रवर्तन करते हैं। वे सारे धर्म-संप्रदायों के कर्म-कांड से मुक्त होकर सहज साधारण और भक्ति का आदर्श उपस्थित करते हैं। इस देश का सामान्य नागरिकर जिन नियमों का स्वाभाविक रुप से पालन कर सकता है, कबीर उसी को आदर्श मानकर चलते हैं। उनके लिए योग पद्धति मानवीकरण की प्रक्रिया का ही अंग है।

कबीर का योग चिंतन इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि उसके माध्यम से वे मनुष्य के भीतर की अनंत संभावनाओं को टटोलकर जगाने और सक्रिय करने का भी उपक्रम है। कबीर के लिए कुंडलिनी का जागना प्रकारांतर से मनुष्य की सुषुप्त आंतरिक शक्ति का जागना है। बिना जाने न तो मनुष्य स्वयं को विकसित कर सकता है और न ही समाज अथवा राष्ट्र को।

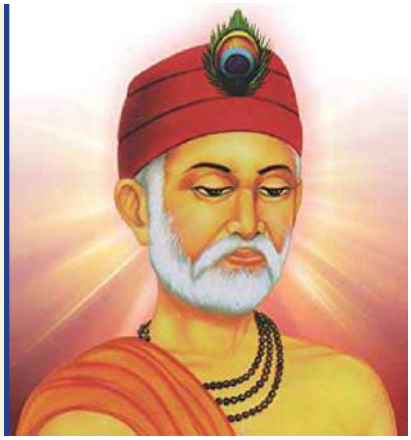

अपने मानवीय दृष्टिकोण के कारण कबीर स्वयं को बौद्ध-सिद्धों और नाथों से अलग कर लेते हैं। वे योग के साथ-साथ अपने आराध्य के प्रति समर्पण और भावानुकूलता भी लाते हैं। उनके अनुसार राम से प्रेम करना साधना के क्षेत्र की खरी कसौटी है। इस पर कोई खोटा व्यक्ति अर्थात सांसारिकता में लिप्त व्यक्ति नहीं टिक सकता। इस साधना के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कबीर को सारे संसार में मात्र दो प्रतीक उपयुक्त प्रतीत हुए- सती और शूर। जिस तरह शुरवीर युध्द क्षेत्र में अपने पैर पीछे नहीं रखता। जरुरत पड़ने पर अपने प्राणों की आहुति देकर लक्ष्य सिद्ध करता है। वह धीरबुध्दि और स्थिर मन वाला होता है। उसका संकल्प अविचल होता है। ठीक उसी तरह साधक को भी दृढ़ निश्चय और निर्भय होना पड़ता है। कबीर के लिए साधना का क्षेत्र भी एक प्रकार का युध्द क्षेत्र ही है। काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि को जीतकर ही सिद्धि तक पहुंचा जा सकता है। कबीर के अनुसार इसी तरह सती का मन भी अविचल होता है। वह सारे प्रलोभनों और आकर्षणों को त्यागकर मन में मात्र अपने प्रियतम के मिलन की भावना संजोकर कुर्बान हो जाती है। यह सात्विक उत्सर्ग उसे प्रेम-साधना के उच्चतम स्तर पर पहुँचा देता है। कबीर साधक से यही अपेक्षा रखते हैं। ऐसा करके ही वह सिद्धि तक पहुँच सकता है। वे अभेद दृष्टि प्राप्त करने के लिए भी साधना को अनिवार्य मानते हैं। उनका स्पष्ट अभिमत है कि जब सारे संसार में एक ही तत्त्व व्याप्त है तो यह भेदभाव व्यर्थ है। कबीर मनुष्य मात्र के लिए इसी स्थिति की कामना करते हैं। इस तरह कबीर के लिए योग साधना केवल ईश्वर प्राप्ति का माध्यम ही नहीं है अपितु मानवीय समता और समदृष्टि स्थापना का मूल सूत्र भी है।

वस्तुत: योग शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। इसका सामान्य अर्थ संबंध अथवा मिलन है। दर्शनशास्त्र में योग का अर्थ जीवात्मा और परमात्मा के मिलन के संदर्भ में होता है। इस संबंध को प्राप्त करने की प्रक्रिया को योग कहते हैं। भारतीय परंपरा में सर्वप्रथम पतंजलि ने योगसूत्र की रचना की। उनके द्वारा प्रतिपादित योग को राजयोग की संज्ञा दी गई है। इससे भिन्न हठयोग है जिसकी उत्पत्ति तंत्र ग्रंथों से हुई है। योग की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद भी है। कतिपय विद्वान इसका संबंध वैदिक परंपरा से जोड़ते हैं तो कुछ इसे जैन ग्रंथों से निकला हुआ मानते हैं। ऐसे विद्वान भी हैं जो योग की उत्पत्ति बौद्ध दर्शन में ढूँढ़ते हैं। भारतीय विद्वानों का एक वर्ग योग को स्वतंत्र परंपरा में रखकर प्राचीन काल से उसका संबंध जोड़ता है। उक्त चार परंपराओं में योग भी चार प्रकार से व्याख्यायित हुआ। यदि राजयोग का संबंध वैदिक परंपरा से है तो हठयोग का तंत्रशास्त्र से है जैन और बौद्ध परंपरा में इन दोनों का ही स्वरुप बदल जाता है। हिंदी साहित्य के इतिहास में सबसे पहले गोरखनाथ हठयोग का प्रवर्तन करते हैं। योग सूत्र में यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार को सिद्धि का बाहरी साधन माना गया है। जबकि अंतिम तीन ध्यान, धारणा और समाधि को आंतरिक साधना माना गया है। कबीर काफी हद तक गोरखनाथ से प्रभावित थे और अपनी कविता में हठयोग की शब्दावली का प्रयोग भी करते हैं। लेकिन वे स्वतंत्रचेता थे जिसके कारण स्वयं को हठयोग से मुक्त कर लेते हैं। वे अनेक स्थलों पर हठयोग की निंदा भी करते हैं। वस्तुत: कबीर का योग चिंतन पतंजलि और गोरखनाथ दोनों से भिन्न है। उनका योग भक्ति योग है जो जनसुलभ है। कबीर की दृष्टि अत्यंत व्यावहारिक थी। वे जनसाधारण को ध्यान में रखकर ही योग की प्रतिष्ठा करते हैं। उनका अद्वैतवाद इसी अर्थ में विलक्षण है कि वे अपने सम की आवश्यकता के अनुसार उसके स्वरूप में परिवर्तन कर देते हैं। वे भलीभाँति जानते थे कि इस देश का सामान्य नागरिक कठोर साधना नहीं कर सकता। फलत: उन्होंने साधना पध्दति को सरस और सरल बनाया। वे इस अर्थ में विशिष्ट हैं कि वे अपने विचारों से मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वे मनुष्यता के लिए शाश्वत मूल्य और मर्यादाएं निर्धारित करते हैं। उन्होंने मनुष्य की समस्त विभाजक रेखाओं को अस्वीकार करते हुए मानव मात्र की एकता, समता तथा बंधुत्त्व का प्रादर्श रखा। यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस देश के मनीषियों द्वारा पुरस्कृत योग अब अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रुप में संपूर्ण मानव जाति का कल्याण कर रहा है। वह विश्व स्तर पर प्रचारित-प्रसारित हो रहा है। कबीर जैसे कवियों, योगियों की साधना आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सार्थकता प्राप्त कर रही है। वह संपूर्ण विश्व के तन, मन, प्राण, आत्मा का परिष्कार और उन्नयन कर रही है। ◆◆◆

कृपाशंकर तिवारी

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा विश्व की सेवा में अर्पित श्रेष्ठतम सेवाभावी पुष्प है

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

– कृपाशंकर तिवारी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विशेष पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाये जाने की ऐतिहासिक घोषणा की। विश्व के व्यापक हित में श्री मोदी की विशेष पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 177 देशों के समर्थन के बाद 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करना संपूर्ण विश्व को, विश्वबन्धुत्व को, मानवता को वसुधैव कुटुम्बकम् के साधक–उपासक, भारत के महान सपूत, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अनुपम भेंट है, विश्व की सेवा में समर्पित श्रेष्ठतम् सेवाभावी पुष्प है, जनता–जनार्दन को अर्पित सर्वोत्तम नैवेद्य है। श्री मोदी की सर्व हितकारी–मंगलकारी भावना, सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वेसन्तु निरामया: की उदात्त सोच एवं सबके कल्याणार्थ विश्व समुदाय को दिया गया यह नायाब तोहफा उनकी आत्मस्थिति का भावपूर्ण प्रकटीकरण है, सर्व हितैषी भावना का परिचायक है।

दीर्घावधि से यौगिक जीवन जीने वाले श्री मोदी तन–मन, चिंतन– मनन एवं आत्मरुपेण सर्वथा बलशाली व्यक्तित्व हैं और यही आनंदप्रदायी स्थिति जन–जन को प्राप्त हो की कामना करने वाले मानवता प्रेमी, विश्वसेवी–विश्वनेता हैं।

नेता शब्द की उत्पत्ति नेत्र धातु से हुई है, नेत्र का अर्थ है आँख और नेता का भी वही कार्य है जो आँख का कार्य है। आँख सबको समान रुप से देखती है, सबके प्रति समान रुप से संवेदनशील होती है, करुणापूर्ण होती है और सभी के लिए आँसू भी बहाती है।

किसी विद्वान की ये पंक्तियाँ ध्यातव्य हैं– दर्द हो चाहे किसी भी अज्ब्र में रोती है आँख, किस कदर हमदर्द सारे ज़िस्म की होती है आँख।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर विश्व में लाखों–करोड़ों की संख्या में लोग अपने तन–मन एवं आत्मस्थिति को स्वस्थ व शक्तिशाली

तन-मन को स्वस्थ रखने के साथ-साथ मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराकर ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण आनंद को प्रदान करने की महान सामर्थ्य का नाम है योग।

बनाने हेतु आसनस्थ हुए, योगस्थ हुए। मानवता के हित में यह कोई सामान्य बात नहीं है, यह एक बहुत बड़ी वैश्विक उपलब्धि है, बहुत बड़ी मानवीय गरिमानुरूप उपलब्धि है।

तन-मन को स्वस्थ रखने के साथ-साथ मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराकर ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण आनंद को प्रदान करने की महान सामर्थ्य का नाम है योग। आत्मा-परमात्मा, भक्त -भगवान, जीव-ब्रह्मा के द्वैत को मिटाकर एकत्व की स्थापना करने की महान शक्तिपुंज एवं सामर्थ्य का नाम है योग और यह विश्व हित में मानवता के कल्याणार्थ एवं भलाई के लिए एक सुखद् व मंगलमय सुसंयोग है - हमारा-आपका-सबका-सम्पूर्ण विश्व का योग है।

इस सुखद् सुसंयोग के सर्वाधिक ऐतिहासिक महत्व का श्रेय यदि किसी को दिया जाना चाहिए तो वह है हमारे आपके - सबके नेता, विश्वनेता श्री नरेन्द्र मोदी । आइए, हम सब मिलकर मानवता को महिमामण्डित करें, योग को महिमामण्डित करें, स्वयं का कल्याण करें और योग को निरंतर स्वयं से जोड़ते हुये स्वस्थ जीवन का आनंद उठाएँ। ◆◆◆

योग
क्या और क्यों ?

– मोहन पाण्डेय

योग का रास्ता इतना सर्व सुलभ है कि इसे कोई भी अपनाकर लाभ ले सकता है । यह जाति , धर्म से ऊपर उठकर मानवता के कल्याण के लिए पतंजलि की देन है। योग के सार्थक मूल्य को समझ कर इसका अनुसरण करने की आवश्यकता है।

योग दर्शन में योग का अर्थ चित्तवृति का निरोध है। मन, अहंकार और बुद्धि को चित्त कहा जाता है। ये अत्यंत ही चंचल है। अत: इनका निरोध आवश्यक है। व्यास ने चित्त की पांच अवस्थाओं को बताया है

- क्षिप्त
- मूढ़
- विक्षिप्त
- एकाग्र
- निरुद्ध

क्षिप्त, चित्त की वह अवस्था है जिसमें यह अत्यधिक चंचल एवं सक्रिय

रहता है। उसका ध्यान किसी वस्तु पर केन्द्रित नहीं हो पाता, अपितु एक वस्तु से दूसरी वस्तु की ओर दौड़ता है। इस अवस्था में इन्द्रियों और मन पर संयम का अभाव रहता है। मूढ़, चित्त की वह अवस्था है जिसमें निद्रा आलस्य आदि की प्रबलता रहती है। चित में निष्क्रियता का उदय होता है। विक्षिप्तावस्था चित की तीसरी अवस्था है। इस अवस्था में चित्त का ध्यान कुछ समय के लिए वस्तु पर जाता है पर स्थिर नहीं हो पाता। इसका कारण यह है कि इस अवस्था में चित्त में स्थिरता का आंशिक अभाव रहता है। यह अवस्था क्षिप्त और मूढ़ की मध्य अवस्था है।

एकाग्र, चित्त की वह अवस्था है जिसमें चित्त अपने विषय पर देर तक ध्यान लगाता रहता है। सत्व गुण की प्रबलता के कारण इस अवस्था में ज्ञान का प्रकाश रहता है। यह अवस्था योग अवस्था में पूर्णतया सहायक होती है।

निरुद्धावस्थाचित्त का पांचवा रूप है। इसको सभी विषयों से हटाकर एक विषय पर ध्यान मग्न किया जाता है। इस अवस्था में स्थिरता का प्रादुर्भाव पूर्णरूप से होता है। अगल–बगल के विषय चित्त को आकर्षित करने में असफल रहते हैं।

योग को साधारण गणितीय अर्थो में समझा जाय तो योग का अर्थ है जोड़ना। अपनी रोज़मर्रा की आदतों में ऐसा क्या जोड़ा जाय या किस वस्तु का योग किया जाय कि मन की उलझन और मानवीय कष्ट दूर हो जाये। मनुष्य भौतिक सुख–सुविधाओं में इस तरह से खोया हुआ है कि उसे यथार्थ मूल्य और स्थितियों का पता ही नहीं। मनुष्य एकाग्र और निरुद्धावस्था तक पहुच ही नहीं पाता। काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद आदि विकारों ने हमारे दृष्टि पर इस तरह से जाला डाले हुए हैं कि हमें सत्य का स्पर्श ही नहीं हो पाता। हम क्षिप्त, मूढ़ और विक्षिप्त की अवस्था में ही मस्त हैं। संसाधन और शक्ति प्रसार के होड़ में लगे समग्र विश्व ने खूब प्रगति की है लेकिन केवल डर, हादसा, असुरक्षा आदि नकारात्मक विचारों की ही वृद्धि हुई है।

योग का रास्ता इतना सर्व सुलभ है कि इसे कोई भी अपना कर लाभ ले सकता है । यह जाति, धर्म से ऊपर उठकर मानवता के कल्याण के लिए पतंजलि की देन है।

वैश्विक शान्ति गायब हो गयी है।

इस बात की चर्चा भारत में प्राचीन काल से ही शुरू हो गयी थी और सतत् आज भी चल रही है। भारतीय महर्षियों ने मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य माना। (मोक्ष उस अवस्था को कहते हैं जहाँ दुखों का सम्पूर्ण नाश हो जाय) उस अवस्था तक पहुचने और पहुचाने का प्रयास करते रहे। उसी क्रम में सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल ऋषि ने एक सर्वशक्तिमान शक्ति ईश्वर को माना, लेकिन बताया कि **ईश्वरासिद्धे :** ईश्वर को सिद्ध नहीं किया जा सकता। योग दर्शन में ईश्वर को योग का विषय बताया गया। योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि माने जाते हैं। योग दुखों और बन्धन का कारण अविवेक को मानता है। योग दर्शन का समग्र अध्ययन और ज्ञान मैं आप को इस लेख में नहीं दे सकता। उसके लिए आप को पतंजलि द्वारा रचित योगसूत्र पढ़ना होगा। योगसूत्र पर व्यास ने एक भाष्य लिखा है जिसे योग–भाष्य कहा जाता है। यह योग का प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। वाचस्पति मिश्र ने भी योगसूत्र पर एक टीका लिखी है, जो तत्व वैशारदी कही जाती है। आप इनको भी पढ़ सकते हैं। मेरा इस लेख के माध्यम से केवल इतना सा उद्देश्य है कि मैं अपने जीवन के अनुभवों को अपने अध्ययन के आधार पर आप के बीच रख सकूं, जितना मैंने योग को समझा है।

पुरुष और प्रकृति की भिन्नता का ज्ञान नहीं रहना ही बन्धन है और बन्धन दु:ख का कारण है। दु:ख और बन्धन का नाश विवेक – ज्ञान से संभव है। विवेक –ज्ञान का अर्थ पुरुष और प्रकृति के भेद का ज्ञान कहा जा सकता है। जब आत्मा को अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हो जाता है, जब आत्मा यह जान लेती है कि मैं मन, बुद्धि, अहंकार से भिन्न हूँ, तब वह मुक्त हो जाती है। योग–दर्शन में इस आत्म–ज्ञान को अपनाने के लिए योगाभ्यास की व्याख्या हुई है।

गीता में योग का अर्थ आत्मा का परमात्मा से मिलन माना गया है। परन्तु योग दर्शन में योग का अर्थ राजयोग है। योग मार्ग की आठ सीढ़ियाँ हैं।

योग के अष्टांग मार्ग इस प्रकार हैं –

(1) यम
(2) नियम
(3) आसन
(4) प्राणायाम
(5) प्रत्याहार
(6) धारणा
(7) ध्यान
(8) समाधि।

बहुत ही कम शब्दों में मैं आप को बताना चाहूंगा। आसन–प्राणायाम को तो सभी जानते हैं। ध्यान और समाधि बहुत आगे की प्रक्रिया है, ऐसा आम जनमानस का मानना है। फिर भी एक नज़र डालते हैं। यम योग का प्रथम अंग है। बाह्य और अभ्यन्तर इन्द्रियों के संयम की क्रिया को यम कहा जाता है। यह पांच प्रकार के होते हैं। अहिंसा अर्थात् किसी प्राणी की हिंसा नहीं करना। सत्य अर्थात् झूठ का परित्याग करना। अस्तेय अर्थात् दूसरे का धन हथियाने की प्रवृत्ति छोड़ना। ब्रह्मचर्य अर्थात् विषय वासना की ओर झुकाने वाली प्रवृत्ति का त्याग। अपरिग्रह अर्थात् लोभवश अनावश्यक वस्तुओं के ग्रहण का त्याग।

नियम योग का दूसरा अंग है, इसका अर्थ सदाचार को प्रश्रय देना है। यह भी पांच बताये गए हैं। शौच – नित्यक्रिया से निवृत्त हो शरीर–मन को साफ़ रखना। संतोष – उचित प्रयास से जो कुछ भी प्राप्त हो उसमें संतुष्ट रहना। तपस – सर्दी गर्मी खड़े रहने, बैठे रहने, शारीरिक कठिनाइयों को झेलना। स्वाध्याय – शास्त्रों का अध्ययन, ज्ञानी पुरुषों का अनुशीलन। ईश्वर प्राणिध्यान – ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखना परम आवश्यक है। आसन और प्राणायाम से मन शांत होता है। स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन का विकास होता है। प्रत्याहार यह योग का पाँचवाँ अंग है। प्रत्याहार का अर्थ है इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाना तथा उन्हें मन के वश में रखना। धारणा का अर्थ चित्त को अभीष्ट विषय पर जमाना। धारणा आन्तरिक अनुशासन की पहली सीढ़ी है। ध्यान का अर्थ अभीष्ट विषय का निरन्तर अनुशीलन। पहले विषयों के अंशों का ज्ञान होता है फिर सम्पूर्ण विषय की रूपरेखा विदित हो जाती है। समाधि की अवस्था में मन अपने ध्येय विषय में पूर्णत: लीन हो जाता है।

योग का रास्ता इतना सर्व सुलभ है कि इसे कोई भी अपना कर लाभ ले सकता है। यह जाति, धर्म से ऊपर उठकर मानवता के कल्याण के लिए पतंजलि की देन है। योग के सार्थक मूल्य को समझ कर इसका अनुसरण करने की आवश्यकता है। और आज सम्पूर्ण विश्व इसका लाभ भी ले रहा है। समूची बात बताने से सत्य की मर्यादा कलंकित होती है। आज विश्व योग दिवस पर हम योग की बात कर रहे हैं। जो भी योगी (कर्मयोगी) योग की सीढ़ी से अपने जीवन के सफ़र में आगे जा रहे हैं, उनका कार्य, व्यवहार, आभामंडल, औरा, सब मिलकर स्थितियों को उनके अनुकूल बनाते हैं। एक योगी जो सोचता है, प्रकृति वो सब लेकर उसके सामने उपस्थित हो जाती है। उसका ज्वलंत उदाहरण आज हमारे सामने नरेंद्र मोदी जी हैं, जिनके प्रयासों से आज भारत फिर से **विश्वगुरु** की प्रतिष्ठा को प्राप्त है। पूरे विश्व में योग दिवस पूरे उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। चिकित्सा विज्ञान भी योग का अनुसरण करने लगा है। यह भारत और विश्व का सौभाग्य है। ◆◆◆

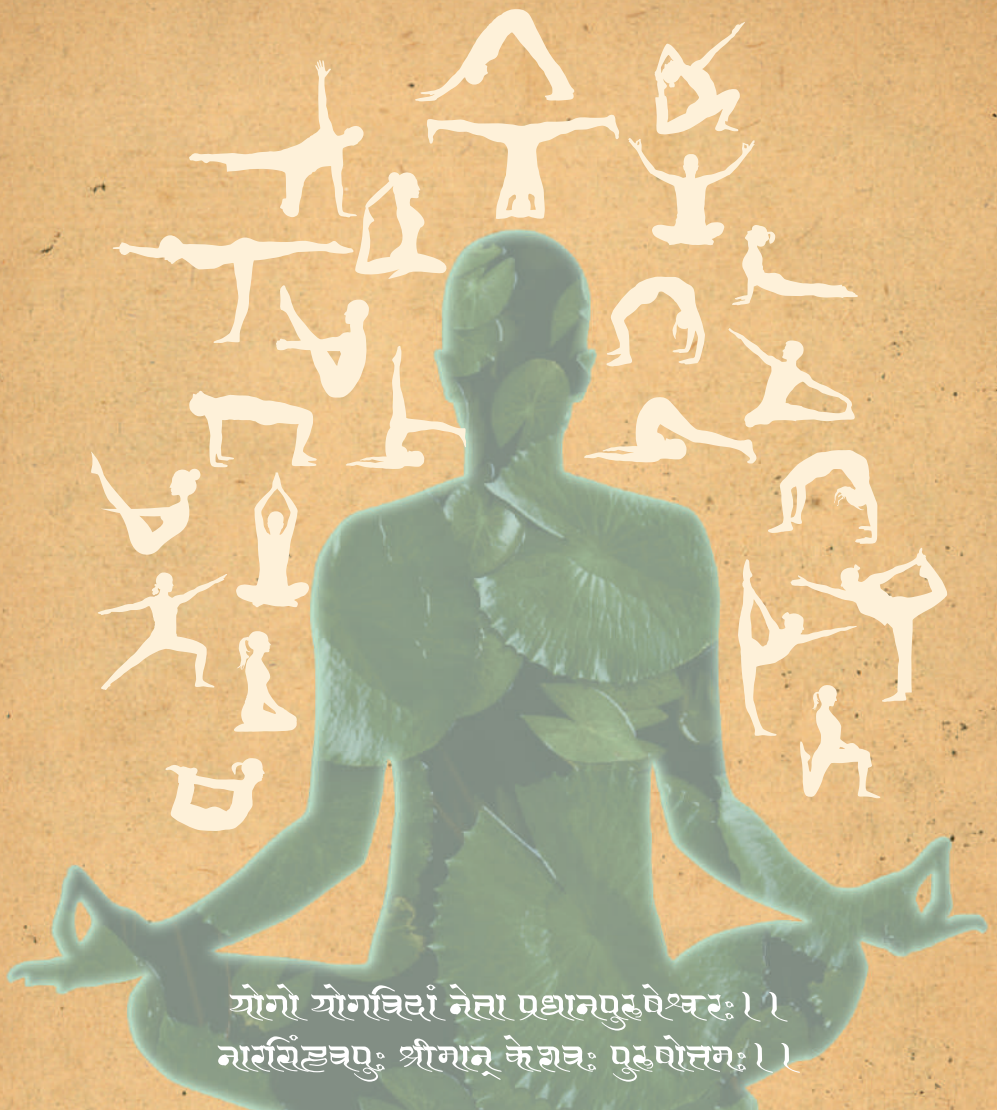

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ।।

विश्व योग दिवस

'प्राकृतिक ढंग से आनेवाली उदासी, घटती आस्था टालनी हो तो शरीर,
मन तथा हृदय को एक होना चाहिए, योगसाधना, व्यायाम,
अध्ययन तथा सब पे प्रेम करना सीखना चाहिए।'

– भवरलाल जैन

१९३७–२०१६

''सार्थक करेंगे इस जीवन को, बेहतर बनाकर इस जगत को।''

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम. आसमाँ छुनेका दम.

भवरलाल अँण्ड कांताबाई
जैन फौंडेशन
दया.. कल्पना.. प्रयास!

पो.बॉ. ७२, जलगाँव-४२५००१. दूरभाष: ०२५७-२२५८०११; इ-मेल: jisl@jains.com; वैबसाईट: www.jains.com

भारतीय उद्योग जगत के चमकते सितारे

- शिवा तिवारी

> पिरोजशा गोदरेज ने अत्यधिक प्रतिस्पर्धी समय में न केवल गोदरेज का शीर्ष स्थान कायम रखा बल्कि इसमें नित नए प्रयोग भी करते रहे। इससे कंपनी का क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर विकास होता रहा। इतना ही नहीं ऐसे हर प्रयोग के मूल में उपभोक्ता संतुष्टि रही। यही वजह है कि गोदरेज एक भरोसे का ब्रांड बनकर उभरा है।

किसी उद्यम को स्थापित करना एक बात है लेकिन उसे शीर्ष पर ले जाना और उसे बरकरार रखना एकदम अलग बात है। गोदरेज कंपनी के संदर्भ में श्री पिरोजशा के लिये यही बात कही जा सकती है। इन्होंने अत्यधिक प्रतिस्पर्धी समय में न केवल गोदरेज का शीर्ष स्थान कायम रखा बल्कि इसमें नित नए प्रयोग भी करते रहे। इससे कंपनी का क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर विकास होता रहा। इतना ही नहीं ऐसे हर प्रयोग के मूल में उपभोक्ता संतुष्टि रही। यही वजह है कि गोदरेज एक भरोसे का ब्रांड बनकर उभरा है। आम उपभोक्ताओं के बीच कंपनी की ऐसी साख बनाने में पिरोजशा गोदरेज की महती भूमिका रही है।

अकादमिक यात्रा और शुरुआती कैरियर

पिरोजशा गोदरेज, गोदरेज प्रॉपर्टीज, गोदरेज हाउसिंग फाइनेंस और गोदरेज फंड मैनेजमेंट के कार्यकारी अध्यक्ष और गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स और गोदरेज एग्रोवेट में एक गैर-कार्यकारी निदेशक हैं। पिरोजशा ने अपना पेशेवर कैरियर शुरू करने के पहले विश्व के सर्वोच्च शैक्षणिक संस्थानों से पढ़ाई की। निश्चित ही इससे इनके कौशल में अकादमिक निपुणता आई, जिसका बेहतर परिणाम देखा भी जा सकता है।

पिरोजशा गोदरेज
कार्यकारी चेयरमैन, गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड

पिरोजशा गोदरेज का व्यक्तित्व ऐसा दिव्य प्रकाश है जिसके मूल में उत्कृष्ट चिंतन, सजल संवेदना है और विचारों की अलौकिक आभा है।

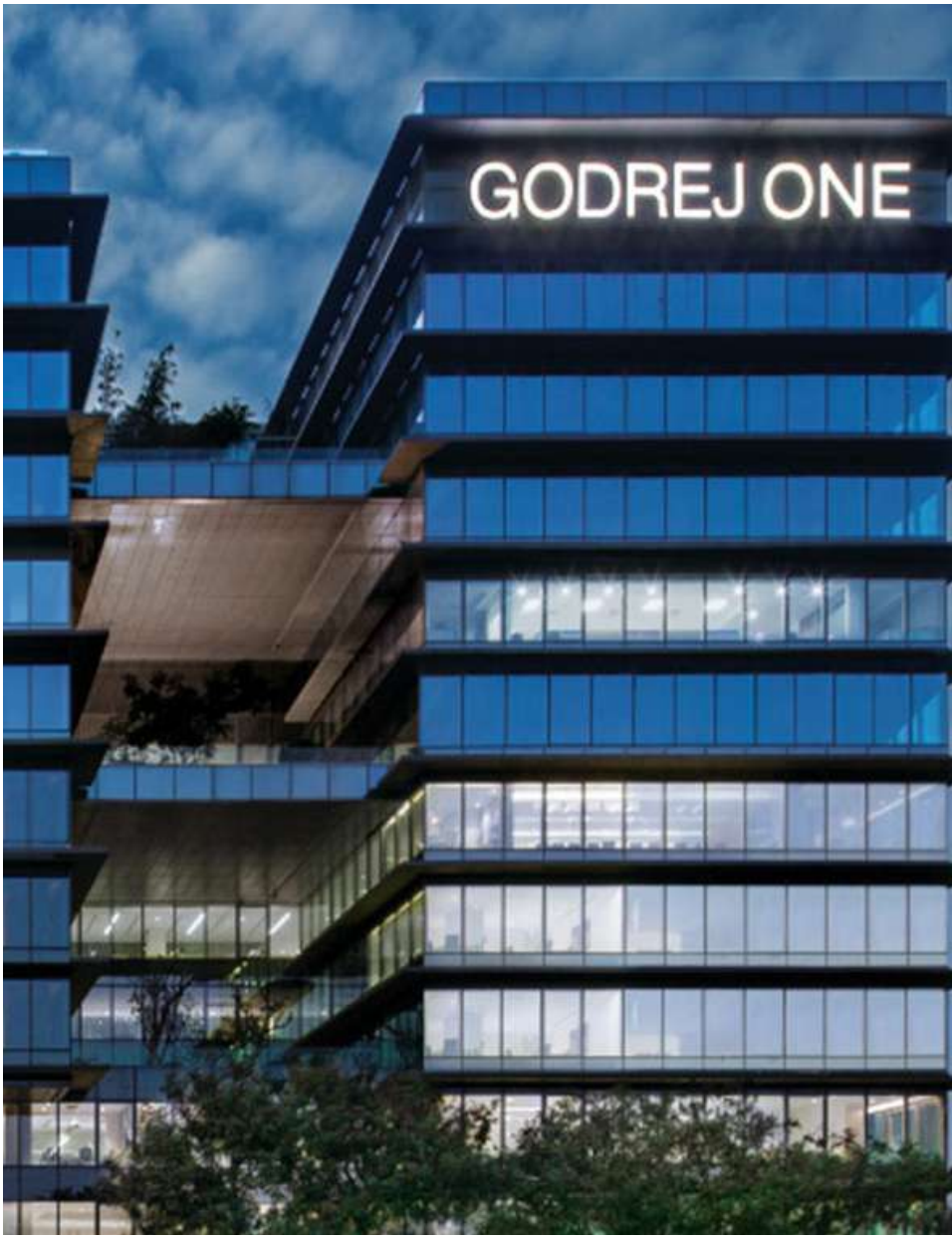

इनकी पढ़ाई- लिखाई की बात करें तो इन्होंने 2002 में व्हार्टन स्कूल ऑफ बिजनेस से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद 2004 में कोलंबिया विश्वविद्यालय से अंतर्राष्ट्रीय मामलों में मास्टर्स किया। इससे सहज ही इनके अकादमिक वैविध्य का अनुमान किया जा सकता है। पुन: 2008 में इन्होंने कोलंबिया बिजनेस स्कूल से एमबीए किया।

श्री पिरोजशा के शुरुआती कैरियर की बात करें तो 2004 में ये जीपीएल में शामिल हुए। यहाँ अगले चार वर्षों यानी 2008 में ये कार्यकारी निदेशक बने। इसके बाद 2012 का वक्त आया जब ये गोदरेज प्रॉपर्टीज के सीईओ नियुक्त किए गए। इन्होंने कंपनी का नेतृत्व कर उसे तेजी से आगे बढ़ाया। वित्तीय वर्ष 2016 में, गोदरेज प्रॉपर्टीज पहली बार आवासीय बिक्री द्वारा सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध भारत की नंबर 1 रियल एस्टेट डेवलपर बन गई, यह स्थिति पिछले 5 वर्षों से बरकरार है।

2017 में, पिरोजशा को गोदरेज प्रॉपर्टीज का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। उन्होंने गोदरेज फण्ड मैनेजमेंट के कार्यकारी अध्यक्ष की भूमिका भी ग्रहण की। 2019 में, पिरोजशा ने गोदरेज हाउसिंग फाइनेंस की स्थापना की और कार्यकारी अध्यक्ष बने। उन्होंने 90 से अधिक देशों और हर महाद्वीप की यात्रा की है और उनकी रुचियों में शतरंज, स्कूबा डाइविंग और दुर्लभ-पुस्तक संग्रह शामिल हैं। वह शादीशुदा हैं और दो छोटी बेटियों के गौरवान्वित पिता हैं।

समावेशी विकास के पक्षधर हैं पिरोजशा

श्री पिरोजशा ने औद्योगिक विकास को हमेशा एक संतुलित नजरिये से देखा है। इनका मानना है कि अगर किसी उद्यम में सस्टेनिबिलिटी नहीं है और वो इन्कलूसिव नहीं है तो उसका टिका रहना मुश्किल तो है ही साथ ही यह मानवता के लिये भी खतरनाक है। इसलिए ही इनके नेतृत्व में, गोदरेज प्रॉपर्टीज सतत विकास की मुहिम में सबसे आगे रही है। इस संदर्भ में कुछ उदाहरणों की बात करें तो 2013 में, जीपीएल को भारत के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम से हरित भवन आंदोलन को संचालित करने के लिए पुरस्कार मिला। इसके अलावा 2016 में गोदरेज प्रॉपर्टीज को ग्लोबल रियल एस्टेट सस्टेनेबिलिटी बेंचमार्क रिपोर्ट में अपने सस्टेनेबिलिटी प्रदर्शन के मामले में एशिया में नंबर 2 और दुनिया में नंबर 5 पर रखा गया था। निश्चित ही यह एक बड़ी उपलब्धि है और समय की मांग भी। इतना ही नहीं इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल (IGBC) ने भारत में पर्यावरण की स्थिरता निर्मित करने में

“

सन 2010 में गोदरेज प्रॉपर्टीज ने यह सुनिश्चित किया कि इनके द्वारा विकसित की जाने वाली हर एक परियोजना के लिए एक प्रमाणित ग्रीन बिल्डिंग होगी।

उनके योगदान के लिए श्री पिरोजशा को IGBC ग्रीन चैंपियन अवॉर्ड 2016 से सम्मानित किया है। इस संदर्भ में कुछ अन्य उदाहरणों को देखें तो 2004 में हैदराबाद में CII-गोदरेज ग्रीन बिल्डिंग सेंटर बना था, यह अपनी तरह की संयुक्त राज्य अमेरिका के बाहर पहली LEED प्लेटिनम इमारत थी और दुनिया में एकमात्र उच्चतम रेटेड LEED इमारत थी। सन 2010 में गोदरेज प्रॉपर्टीज ने यह सुनिश्चित किया कि इनके द्वारा विकसित की जाने वाली हर एक परियोजना के लिए एक प्रमाणित ग्रीन बिल्डिंग होगी। इनके कई परियोजनाओं को LEED प्लेटिनम प्रमाणपत्र प्राप्त हुए हैं, जिन्हें विश्व स्तर पर अग्रणी रूप में स्थिरता, सकारात्मकता की मान्यता प्राप्त है। अहमदाबाद में इनकी बड़ी शहरी परियोजना, गोदरेज गार्डन सिटी, भारत में केवल 2 परियोजनाओं और दुनिया भर में 16 परियोजनाओं में से एक के रूप में क्लिंटन फाउंडेशन द्वारा जलवायु सकारात्मकता विकास प्राप्त करने के लक्ष्य में उनके साथ साझेदारी करने के लिए चुना गया था।

नवाचारी दृष्टि और कंपनी का विस्तार

श्री पिरोजशा के नेतृत्व में गोदरेज प्रॉपर्टीज रियल एस्टेट उद्योग के क्षेत्र में नवाचार, स्थिरता और उत्कृष्टता के दर्शन को लेकर आया है। गोदरेज प्रॉपर्टीज द्वारा विकसित हरेक अत्याधुनिक डिजाइन उत्कृष्टता और विश्वास की 125 साल तक प्रौद्योगिकी के प्रति प्रतिबद्धता की विरासत को प्रदर्शित करता है। यही वजह है कि हाल के वर्षों में, गोदरेज प्रॉपर्टीज को 250 से अधिक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिसमें 2019 में ब्रांड ट्रस्ट रिपोर्ट, वें कंस्ट्रक्शन वीक अवॉर्ड्स 2019 में रियल एस्टेट कंपनी ऑफ द ईयर से सबसे भरोसेमंद रियल एस्टेट ब्रांड, समानता और APREA प्रॉपर्टी लीडर्स अवार्ड्स में डाइवर्सिटी चैंपियन 2019 अवॉर्ड,

“

2010 में, गोदरेज प्रॉपर्टीज एक सफल आईपीओ के माध्यम से सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध कंपनी बन गई।

“

CNBC- आवाज रियल एस्टेट अवॉर्ड्स 2018 में **द इकोनॉमिक टाइम्स बेस्ट रियल एस्टेट ब्रांड 2018** और बिल्डर ऑफ द ईयर प्रमुख हैं।

इसके अलावा पिछले कुछ वर्षों में इनकी परियोजनाओं ने भारतीय रियल एस्टेट बाजार में अनेक श्रेणियों में प्रथम स्थान प्राप्त किये हैं। मुंबई में प्लेनेट गोदरेज, 2008 में भारत की सबसे ऊंची एक गगनचुंबी इमारत थी। इसने ग्राहकों की सुरक्षा और भलाई पर ध्यान को भी रेखांकित किया, जो निवासियों को आग से बचाने के लिए देश में पहली परियोजना बन गई। इनकी वाणिज्यिक कार्यालय परियोजना, गोदरेज BKC, भारत के प्रमुख वाणिज्यिक जिले, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स में एकमात्र LEED (लीडरशिप इन एनर्जी एंड इनविरोन्मेंट डिजाइन में) प्लेटिनम रेटेड इमारत है, जो पर्यावरणीय स्थिरता के लिए गोदरेज प्रॉपर्टीज की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है।

यह वह परियोजना भी है जिसने भारत के अब तक के सबसे अधिक वाणिज्यिक अंत-उपयोगकर्ता बिक्री लेनदेन का रिकॉर्ड तोड़ा है, जब एक बड़ी बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी ने 2015 में 1479 करोड़ रुपये के साथ इस परियोजना में हिस्सा लिया। तब से ही इनकी प्रमुख परियोजना, द ट्रीज, भारत की सबसे स्थायी रूप से नियोजित मिश्रित उपयोग परियोजना बन गई है , जो कि देश के शहरी डिजाइन सोच के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देगी। 2015 में इस परियोजना को शुरू करने के छह महीनों के भीतर 1200 करोड़ रुपये से अधिक की जगह बेच दी गई, जिससे यह देश की सबसे सफल आवासीय परियोजनाओं में से एक बन गई।

वस्तुत: अनुमानित 10 मिलियन भारतीय प्रतिवर्ष शहरी क्षेत्रों में जाते हैं, आने वाले दशकों में देश के शहरी परिदृश्य में प्रभावी रूप से बदलाव होने की संभावना है। इसलिए ही कंपनी का दृढ़ विश्वास है कि भारत को स्थायी रूप से शहरीकरण के अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

2010 में, गोदरेज प्रॉपर्टीज एक सफल आईपीओ के माध्यम से सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध कंपनी बन गई, जिसमें उसने 100 मिलियन अमरीकी डॉलर मिले। गोदरेज प्रॉपर्टीज ने 2016 में एक फंड मैनेजमेंट संस्था भी बनाई। गोदरेज फंड मैनेजमेंट ने देश में साल के सबसे बड़े आवासीय रियल एस्टेट केंद्रित फंड 275 मिलियन अमरीकी डॉलर जुटाए।

श्री पिरोजशा के नेतृत्व में आज यह कंपनी देश के प्रमुख रियल एस्टेट बाजारों में मजबूत उपस्थिति रखती है। वित्तीय वर्ष 2016 में, पहली बार, गोदरेज प्रॉपर्टीज भारत की सबसे बडी सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध रियल एस्टेट डेवलपर थी। श्री पिरोजशा के निर्देशन में निश्चित ही कंपनी नित नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी।

◆◆◆

GHP GROUP
vision to reality

Empowering a child. Sharpening the mind.

Watch your child climb the ladder of success from the very first step he takes towards building a strong future for himself through the GHP Group. Dedicated to imparting education to every child, the group covers the entire journey of your child's education from nursery to graduation through its well established schools & colleges. Offering world class education, these institutions are well equipped to ensure your child's all round development.

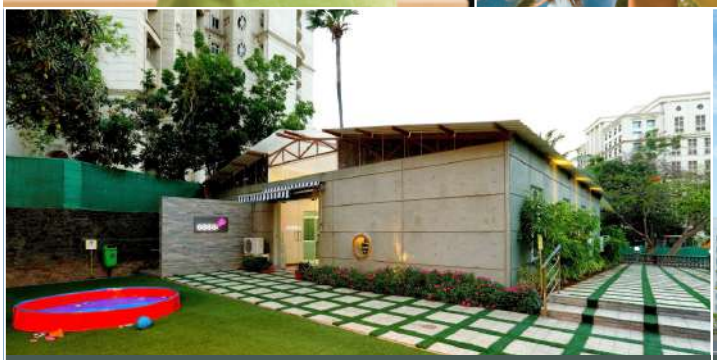

GSBB PRE-SCHOOL, POWAI

GOPAL SHARMA GROUP OF SCHOOLS

Call : 25700315 / 25700789 | E-mail : gsmspowai@gmail.com/ gsispowai@gmail.com | www.ghpeducations.com

GSMS
Gopal Sharma
Memorial School

PEHS
Powai English
High School

GSBB
Gopal Sharma
Blooming Buds Pre-School,
Hiranandani Complex

BVBS
Bal Vishwa Bharati School
& Junior College, Jaipur

CSC
Chandrabhan Sharma College
Arts, Science & Commerce

GSIS
Gopal Sharma
International School

Gopal Sharma Group of Schools, Powai Vihar, Powai, Mumbai – 400 076.

thoughtrains ghp-010112

मोहित मल्होत्रा
एमडी-सीईओ, गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड

मोहित मल्होत्रा ने अत्यधिक प्रतिस्पर्धी समय में न केवल गोदरेज का शीर्ष स्थान कायम रखा बल्कि इसमें नित नए प्रयोग भी करते रहे।

कम्पनी की तस्वीर बदल देने वाले सीईओ मोहित मल्होत्रा

उद्यमिता एक कौशल है। केवल पूंजी और संसाधन के बल पर कोई उद्यम शुरू तो किया जा सकता है पर उसे निरंतर बनाए रखना संभव नहीं है। इसके लिये उद्यमिता के कौशल की आवश्यकता होती है। यही वो कौशल है जो संगठन को बनाने, उसे संचालित करने, कंपनी के आर्थिक विस्तार को बनाए रखने, उपभोक्ता हितों का ध्यान रखने, व्यापारिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए लाभ प्राप्त करने की नीतियाँ बनाने में सहायक होता है। अगर इन सभी गुणों को एक व्यक्ति में समाहित करना हो तो वो नाम होगा मोहित मल्होत्रा।

कंपनी का मानना है कि गोदरेज प्रॉपर्टीज में काम करने वाले लोग ही हमें एक उत्कृष्ट कंपनी बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं, ये लोग प्रतिभा, गतिशीलता और प्रेरणा से लबरेज हैं। हमारे लोगों और उनके आचरण को सम्मान देते हुए गोदरेज प्रॉपर्टीज को नंबर एक रियल एस्टेट डेवलपर के रूप में स्थान दिया गया है और इकोनॉमिक टाइम्स के साथ साझेदारी में ग्रेट प्लेस टू वर्क इंस्टीट्यूट द्वारा लगातार चार बार शीर्ष पचास कंपनियों में स्थान दिया गया है। और इन लोगों में मोहित मल्होत्रा का नाम अग्रणी है।

परिचय और शुरुआती करियर

सबसे पहले अगर मोहित के अकादमिक अनुभव की बात करें तो इन्होंने देश के शीर्ष प्रबंधन संस्थान से पढ़ाई की है। इस प्रकार मोहित ने भारतीय प्रबंधन संस्थान, कलकत्ता से स्नातकोत्तर डिप्लोमा किया है।

इसके बाद इन्होंने यूनिलीवर इंडिया में अपना करियर शुरू किया। फिर इन्होंने (AT Kearney) एटी किर्नी के साथ भी काम किया। मोहित 2006 से रियल एस्टेट उद्योग में काम कर रहे हैं और 2010 में ये गोदरेज प्रॉपर्टीज में शामिल हुए। मोहित ने कंपनी के विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये बिजनेस डेवलपमेंट के प्रमुख के रूप में जीपीएल में शामिल हुए और बाद में

एनसीआर क्षेत्र में अतिरिक्त भूमिका निभाई, जहाँ इन्होंने गोदरेज प्रॉपर्टीज को एनसीआर बाजार में नंबर 1 उद्यमी बनाने का काम किया। इन्होंने प्रमुख नेतृत्वशाली जिम्मेदारियों को निभाना जारी रखा और 2017 में सीईओ बने। वर्तमान में श्री मोहित मल्होत्रा गोदरेज प्रॉपर्टीज के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं।

उद्यम विस्तार व पुरस्कार

इनके नेतृत्व में गोदरेज प्रॉपर्टीज रियल एस्टेट उद्योग के क्षेत्र में अनेक नए प्रयोग लेकर आया है। पिछले कुछ वर्षों में इनकी परियोजनाओं ने भारतीय रियल एस्टेट बाजार में कई प्रथम स्थान प्राप्त किये हैं। इसलिये ही इनके योगदान से कंपनी को अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। अगर कुछ उदाहरणों की चर्चा करें तो इन्हें ट्रैक टू रियल्टी ब्रांड एक्स रिपोर्ट 2019-20 में राष्ट्रीय ब्रांड लीडर का पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अलावा कॉन्स्ट्रक्शन वर्ल्ड आर्किटेक्ट और बिल्डर (सीडब्ल्यूएबी) पुरस्कार 2018, इंटेलिजेंट एंटरप्राइज पुरस्कार 2018, गोल्डन ब्रिक्स पुरस्कार 2016-17,भारत का शीर्ष निर्माता पुरस्कार, सीडब्ल्यूएबी पुरस्कार 2017, गोल्डन पीकॉक राष्ट्रीय गुणवत्ता पुरस्कार – 2017,वर्ष 2017 का सर्वश्रेष्ठ डेवलपर, कंस्ट्रक्शन टाइम्स बिल्डर्स पुरस्कार 2017, एबीपी न्यूज रियल एस्टेट पुरस्कार 2017 तथा 5 वां पोर्टर पुरस्कार आदि प्राप्त हुए हैं।

इनकी वाणिज्यिक कार्यालय परियोजना, गोदरेज BKC, भारत के प्रमुख वाणिज्यिक जिले, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स में एकमात्र LEED (लीडरशिप इन एनर्जी एंड इनविरोन्मेंट डिज़ाइन में) प्लेटिनम रेटेड इमारत है, जो पर्यावरणीय स्थिरता के लिए गोदरेज प्रॉपर्टीज की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है। यह वह परियोजना भी है जिसने भारत के अब तक के सबसे अधिक वाणिज्यिक अंत-उपयोगकर्ता बिक्री लेनदेन का रिकॉर्ड तोड़ा है, जब एक बडी बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी ने 2015 में 1,419 करोड़ रुपये के साथ इस परियोजना में हिस्सा लिया। तब

> “गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड का मानना है कि वह हमेशा पर्यावरण संरक्षण के आंदोलनों में सबसे आगे रहा।”

से ही इनकी प्रमुख परियोजना, द ट्रीज, भारत की सबसे स्थायी रूप से नियोजित मिश्रित उपयोग परियोजना बन गई है , जो कि देश के शहरी डिजाइन सोच के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देगी। 2015 में इस परियोजना को शुरू करने के छह महीनों के भीतर 1200 करोड़ रुपये से अधिक की जगह बेच दी गई, जिससे यह देश की सबसे सफल आवासीय परियोजनाओं में से एक बन गई।

वस्तुतः अनुमानित 10 मिलियन भारतीय प्रतिवर्ष शहरी क्षेत्रों में जाते हैं, आने वाले दशकों में देश के शहरी परिदृश्य में प्रभावी रूप से बदलाव होने की संभावना है। कंपनी का मानना है कि हमारा समूह हमेशा पर्यावरण संरक्षण के आंदोलनों में सबसे आगे रहा है। 2004 में हैदराबाद में CII-गोदरेज ग्रीन बिल्डिंग सेंटर बना था, यह अपनी तरह की संयुक्त राज्य अमेरिका के बाहर पहली LEED प्लेटिनम इमारत थी और दुनिया में एकमात्र उच्चतम रेटेड LEED इमारत थी। सन 2010 में गोदरेज प्रॉपर्टीज ने यह सुनिश्चित किया कि हमारे द्वारा विकसित की जाने वाली हर एक परियोजना के लिए एक प्रमाणित ग्रीन बिल्डिंग होगी। हमारी कई परियोजनाओं को LEED प्लेटिनम प्रमाणपत्र प्राप्त हुए हैं, जिन्हें विश्व स्तर पर अग्रणी रूप में स्थिरता, सकारात्मकता का मान्यता प्राप्त है। साथ ही वो कहते हैं कि अहमदाबाद

में हमारी बड़ी शहरी परियोजना, गोदरेज गार्डन सिटी, भारत में केवल 2 परियोजनाओं और दुनिया भर में 16 परियोजनाओं में से एक के रूप में क्लिंटन फाउंडेशन द्वारा जलवायु सकारात्मकता विकास प्राप्त करने के लक्ष्य में उनके साथ साझेदारी करने के लिए चुना गया था। 2016 में हम GRESB (ग्लोबल रियल एस्टेट सस्टेनेबिलिटी बेंचमार्किंग) अध्ययन के अनुसार एशिया में दूसरे और दुनिया में 5 वें स्थान पर रहे, जो एक औद्योगिक नेतृत्व और शासन में स्थिरता बताने वाला मंच है। इसलिए ही कंपनी का दृढ़ विश्वास है कि भारत को स्थायी रूप से शहरीकरण के अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

2010 में, गोदरेज प्रॉपर्टीज एक सफल आईपीओ के माध्यम से सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध कंपनी बन गई, जिसमें उसने 100 मिलियन अमरीकी डॉलर मिले। गोदरेज प्रॉपर्टीज ने 2016 में एक फंड मैनेजमेंट संस्था भी बनाई। गोदरेज फंड मैनेजमेंट ने देश में साल के सबसे बडे.आवासीय रियल एस्टेट केंद्रित फंड 275 मिलियन अमरीकी डॉलर जुटाए। गोदरेज कंपनी के इस विस्तार में श्री मल्होत्रा की महती भूमिका है। ◆◆◆

अवरोधों का सामना करती महिलाएं

– सुनैना कुमार

भारत में महिलाओं की बैंकिंग तक पहुंच का विश्लेषण करने वाले गिने-चुने अध्येताओं में शामिल, पल्लवी चव्हाण के 2020 के एक अध्ययन के मुताबिक, महिलाएं जमा में जितना योगदान देती हैं उसका 27 फीसद ही उन्हें ऋण मिला, जबकि पुरुषों को उनके जमा का 52 फीसद ऋण मिला।

भारत ने अपनी महिला उद्यमियों को लगातार निराश किया है। एक ऐसे देश में जहां महिलाएं औपचारिक अर्थव्यवस्था में प्रवेश के लिए अवरोधों का सामना करती हैं, उद्यमिता ही अकेला व्यवहारिक तरीका है जो महिलाओं के बीच रोजग़ार के अवसर पैदा कर सकता है। उद्यमी गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना बेहद जऱूरी है, खासकर वैश्विक महामारी के बाद से महिला रोजग़ार में आयी तेज गिरावट को देखते हुए। सेंटर फॉर मानिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सीएमआईई) का ताजा आंकड़ा दिखाता है कि 2021-22 में शहरी महिलाओं के बीच 'श्रम बल में महिला भागीदारी दर 7 फीसद गिरी है।

उद्यमिता के लिए मददगार स्थितियों के अभाव ने भारतीय महिलाओं की प्रगति को बहुत ज्यादा बाधित किया है। कारोबार में महिलाओं की प्रगति पर गौर करने वाले Mastercard Index of Women Entrepreneurs 2021 के मुताबिक, भारत दुनिया के सबसे निचले पायदान पर मौजूद देशों में था (65 देशों के बीच 57 वें स्थान पर)। इंडेक्स में शामिल नाइजीरिया, युगांडा, वियतनाम और फिलीपीन्स जैसे देशों में महिलाएं, इन देशों में सामाजिक-सांस्कृतिक अवरोधों और अवसंरचनात्मक अभावों का सामना करने के बावजूद, उद्यमी गतिविधियों में पुरुषों से ज्यादा तेज गति से लगी हुई थीं।

छोटे और सूक्ष्म उद्योगों के वास्ते 10 लाख रुपये तक के जमानत – मुक्त कर्ज मुहैया कराने के लिए, 2015 में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना शुरू की गयी. इस योजना के नतीजे मिलेजुले रहे हैं।

महिला उद्यमियों द्वारा सामना किये जाने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक अवरोध

दुनिया के हर हिस्से में मौजूद हैं लेकिन भारत में महिलाओं पर बिना-भुगतान देखभाल कार्य का बोझ (जो दुनिया में सबसे ज्यादा है) इन अवरोधों को और भारी बना देता है। राष्ट्रीय सैंपल सर्वेक्षण कार्यालय के 2019 के सर्वेक्षण के मुताबिक, भारत में 91.8 फीसद महिलाओं ने परिवार के लिए बिना-भुगतान घरेलू कार्य में हिस्सा लिया।

हालांकि, यह लेख वित्तपोषण के मामले में महिला उद्यमियों द्वारा सामना किये जाने वाले अंतर पर केंद्रित है। इंटरनेशनल फाइनेंस कॉरपोरेशन द्वारा 2015 में किये गये एक अध्ययन के मुताबिक, भारत में महिला स्वामित्व वाले एमएसएमई ने वित्त पोषण में 70.37 फीसद के बड़े अंतर का सामना किया। वित्तपोषण का अभाव सबसे बड़ी चिंता है – देश में ९० फीसद महिलाएं वित्तपोषण के अनौपचारिक स्रोतों पर भरोसा करती हैं। यह हाल के वर्षों में प्रधानमंत्री जनधन योजना के चलते बैंक खातों तक महिलाओं की पहुंच में बड़ा सुधार होने के बावजूद है।

उद्यमिता के लिए मददगार स्थितियों के अभाव ने भारतीय महिलाओं की प्रगति को बहुत ज्यादा बाधित किया है। कारोबार में महिलाओं की प्रगति पर गौर करने वाले Mastercard Index of Women Entrepreneurs 100 के मुताबिक, भारत दुनिया के सबसे निचले पायदान पर मौजूद देशों में था।

अच्छे इरादे वाली नीतियां साबित हो रहीं अपर्याप्त

IWWAGE के एक आकलन के अनुसार, भारत में 20 से 30 साल की उम्र के बीच कारोबार शुरू करने वाली लगभग 58 फीसद महिला उद्यमी स्व-वित्तपोषण,

मोटे तौर पर अपनी बचत, या विरासत में मिली परिसंपत्ति या भौतिक संपत्ति जिसे गिरवी रखा जा सके, पर भरोसा करती हैं। यह महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों की ऋण-योग्यता को लेकर बैंकों और वित्तीय संस्थानों के सामाजिक पूर्वाग्रहों के चलते है। महिलाओं के स्वामित्व वाले उद्यमों को जोखिम भरा माना जाता है और विकासशील देशों में महिला उद्यमियों के ऋण आवेदनों को नामंजूर किये जाने की दर ज्यादा है। परिसंपत्तियों और जमीन – जायदाद तक सीमित पहुंच के चलते, उधार के लिए जमानत (कोलेटरल) का अभाव, महिलाओं की राह में और रोड़ा अटकाता है। यह महिलाओं को ऋण के लिए आवेदन करने से रोकता है और इस तरह एक स्वत: कायम चक्र बनता है। यह तब है जब ज्यादातर शोध पुष्टि करते हैं कि पुरुष कर्जदारों के मुकाबले महिलाएं ज्यादा अनुशासित हैं और बेहतर क्रेडिट प्रोफाइल रखती हैं।

छोटे और सूक्ष्म उद्योगों के वास्ते 10 लाख रुपये तक के जमानत-मुक्त कर्ज़. मुहैया कराने के लिए, 2015 में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना शुरू की गयी। इस योजना के नतीजे मिले-जुले रहे हैं। इसके तहत कर्जदारों में महिलाओं की प्रधानता है, वित्त मंत्रालय द्वारा साझा किया गया आंकड़ा दिखाता है कि 2021 में करीब 68 फीसद कर्ज़ महिला उद्यमियों को बांटे गये।

इस खाई को पाटने के लिए, कई सारी सरकारी योजनाएं रही हैं। छोटे और सूक्ष्म उद्योगों के वास्ते 10 लाख रुपये तक के जमानत-मुक्त कर्ज़ मुहैया कराने के लिए, 2015 में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना शुरू की गयी। इस योजना के नतीजे मिले जुले रहे हैं। इसके तहत कर्ज़द्वारों में महिलाओं की प्रधानता है, वित्त मंत्रालय द्वारा साझा किया गया आंकडा दिखाता है कि 2021 में करीब 68 फीसद कर्ज़ महिला उद्यमियों को बांटे गये। मगर, इन कर्जों में से 88 फीसद शिशु श्रेणी (मुद्रा योजना के तहत आने वाले 50,000 रुपये तक के कर्ज) के हैं। इस योजना से महिलाओं को स्पष्ट रूप से लाभ हुआ, लेकिन यह छोटे कर्जों तक सीमित रहा है।

इसी तरह, 2०16 में **स्टैंड अप इंडिया** का आरंभ हुआ। इसके तहत समाज

आम धारणा के विपरीत, पुरुषों के कारोबार के मुकाबले महिलाओं के कारोबार ज्यादा मुनाफे वाले हैं, और वित्तीय संस्थानों के लिए महिला उद्यमी एक बड़े अवसर के रूप में मौजूद हैं।

के कम लाभान्वित तबकों जैसे महिला उद्यमियों और सामाजिक रूप से पिछड़ा समूहों के लिए 10 लाख से लेकर 1 करोड.रुपये तक के कर्जों की पेशकश की गयी। स्टैंड अप इंडिया के तहत 81 फीसद से ज्यादा कर्ज महिला उद्यमियों के लिए मंजूर किये गये। इसके अलावा, नीति आयोग ने 2018 में महिला उद्यमिता मंच स्थापित किया, जो नि:शुल्क क्रेडिट रेटिंग, मेंटरशिप, वित्तपोषण समर्थन, अप्रेंटिसशिप और कॉरपोरेट साझेदारी के जरिये, देश भर की नयी व मौजूदा महिला उद्यमियों को समर्थन देने के लिए एक इकोसिस्टम है। महिलाओं द्वारा सामना किये जाने वाले अवरोधों के खिलाफ इन योजनाओं के असर पर सीमित प्रकाशित सामग्री उपलब्ध है।

औपचारिक वित्त में व्यक्तिगत महिला कर्ज दारों के साथ नाइंसाफी

भले ही बैंकों में पैसे जमा रखने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ी है,

> “आम धारणा के विपरीत, पुरुषों के कारोबार के मुकाबले महिलाओं के कारोबार ज्यादा मुनाफे वाले हैं, और वित्तीय संस्थानों के लिए महिला उद्यमी एक बड़े अवसर के रूप में मौजूद हैं।”

2019 में अखिल भारतीय ऋण एवं निवेश सर्वेक्षण ने दिखाया कि ग्रामीण भारत में 80.7 फीसद और शहरी भारत में 81.3 फीसद महिलाओं के पैसे बैंकों में जमा हैं), लेकिन यह ऋण तक उनकी पहुंच में रूपांतरित नहीं हुआ है। वित्तीय समावेशन की नीति ने ऋण तक पहुंच से ज्यादा जमा पर जोर दिया है। तो वह क्या है जो वित्तपोषण में लगातार कायम जेंडर गैप की व्याख्या करता है? भारतीय रिजर्व बैंक के पर्यवेक्षण विभाग से संबद्ध, और भारत में महिलाओं की बैंकिंग तक पहुंच का विश्लेषण करने वाले गिने-चुने अध्येताओं में शामिल, पल्लवी चव्हाण के 2020 के एक अध्ययन के मुताबिक, महिलाएं जमा में जितना योगदान देती हैं उसका 27 फीसद ही उन्हें ऋण मिला, जबकि पुरुषों को उनके जमा का 52 फीसद ऋण मिला।

यह अध्ययन महिलाओं को मिले कुल ऋण में से व्यक्तियों को मिले ऋण को अलग कर यह दिखाता है कि व्यक्तिगत रूप में महिलाओं के लिए, बैंकों से ऋण हासिल कर पाना और भी चुनौतीपूर्ण है। ज्यादातर महिलाएं माइक्रोफाइनेंस संस्थाओं, स्वयं-सहायता समूहों और साझा दायित्व समूहों के जरिये ही बैंक ऋण तक पहुंच हासिल करने में सक्षम हैं। 2017 के आंकड़े के मुताबिक, कुल बैंक ऋण में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 7 फीसद थी, जबकि पुरुषों के मामले में यह 30 फीसद था। कुल ऋण में महिलाओं का हिस्सा 8 फीसद बढ़ा, वह भी जब इसमें माइक्रोफाइनेंस संस्थाओं, स्वयं-सहायता समूहों और साझा दायित्व समूहों को दिये गये ऋण को शामिल किया गया।

ऐतिहासिक रूप से, विकासशील देशों में, महिलाओं के वित्त को सशक्तीकरण के अपने सामाजिक एवं आर्थिक परिणामों के साथ माइक्रोफाइनेंस का पर्याय मान लिया गया है, जो महिलाओं के वित्त के दायरे को सीमित करता है क्योंकि इसमें यह पूर्व-धारणा निहित है कि महिलाओं की ऋण आवश्यकताएं छोटी होती हैं। मुद्रा योजना का आंकड़ा, जहां 88 फीसद 50,000 रुपये तक की श्रेणी में थे और ज्यादातर कर्जदार महिलाएं थीं, इस पूर्व-धारणा को रेखांकित करता है कि महिलाओं की जरूरतें छोटे कर्जों तक सीमित हैं। बीते कुछ सालों में बैंक ऋण में महिलाओं के हिस्से में बढ़ोत्तरी हुई है, जो अपने आप में एक सकारात्मक संकेत है लेकिन यह वृद्धि छोटी अवधि की श्रेणी के पर्सनल और कंज्यूमर ड्यूरेबल लोन में रही है।

आम धारणा के विपरीत, पुरुषों के कारोबार के मुकाबले महिलाओं के कारोबार ज्यादा मुनाफे वाले हैं और वित्तीय संस्थानों के लिए महिला उद्यमी एक बड़े अवसर के रूप में मौजूद हैं।

इसके अलावा, वित्तीय समावेशन का कार्य तब तक पूरा नहीं होगा जब तक कि महिलाओं की बैंक ऋण तक समतापूर्ण पहुंच नहीं होगी।

◆◆◆

अतीत इतना महत्वपूर्ण है कि इसे शौकिया इतिहासकारों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। शायद फिल्मकारों को शौर्य से जुड़ी कहानियां खोजने के लिए अतीत में जाने के बजाय वर्तमान पर ही केंद्रित होना चाहिए ।

इतिहासकारों को ही सच बताने का काम करने दें

- कावेरी बामजेई

क्या हो जब बॉलीवुड इतिहास के साथ छेड़-छाड़ में जानबूझकर एक सहयोगी भूमिका निभाने लगे? तब बॉलीवुड इसके लिए कवियों और लेखकों को दोषी ठहराने लगता है। लिहाजा, फिल्म पर आपत्ति ली जाती है तो संजय लीला भंसाली कह देते हैं कि यह मलिक मुहम्मद जायसी की कविता पद्मावत पर आधारित है। अब चंद्रप्रकाश द्विवेदी कह रहे हैं कि सम्राट पृथ्वीराज चंदबरदाई के पृथ्वीराज रासो पर आधारित है और जो उनकी फिल्म में इतिहास खोजने की कोशिश कर रहे हैं, उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। उनके ही शब्दों का उपयोग करें तो यह फिल्म तो राजनीति का अखाड़ा बन गई! जबकि स्वयं उन्होंने यह फिल्म जनता को दिखाने से पहले केंद्रीय गृहमंत्री और यूपी के सीएम को दिखाई थी। बॉलीवुड में लम्बे समय से एक व्यक्ति का इतिहास दूसरे के लिए पोलिटिकल एजेंडा रहा है और इसके कारण भी हैं। बॉलीवुड में इतिहास पर आधारित फिल्में अमूमन पटरी से उतरती ही रही हैं। शहजादा सलीम और कनीज अनारकली की प्रेमकथा को ही ले लें, जिसका कोई ऐतिहासिक संदर्भ नहीं है, सिवाय इसके कि लाहौर स्थित पंजाब सचिवालय में अनारकली की कब्र है। लेकिन इसके बावजूद के.आसिफ की मुगले आजम एक बड़ी कामयाबी साबित हुई थी। आशुतोष गोवारिकर की जोधा अकबर की ही अगर बात करें तो उसकी कहानी भी विवादों में रही है। बॉलीवुड के दिल में अचानक ही ऐतिहासिक कहानियों के लिए प्यार नहीं जग गया है। लेकिन सम्राट पृथ्वीराज के मामले में अंतर यह है कि फिल्म के निर्माता ने स्वयं फिल्म का राजनीतिकरण करना चाहा है। फिल्म में यह दावा किया गया है कि वे 1947 से पहले देश के अंतिम हिंदू शासक थे। फिल्म के प्रोमो में भी यही प्रचारित किया गया। ऐसा करके दक्षिण के बेहतरीन हिंदू साम्राज्यों की उपेक्षा की गई है। फिल्म के मुख्य अभिनेता ने यह दावा भी किया कि आज स्कूलों में गलत इतिहास पढ़ाया जा रहा है, जिसमें आक्रांताओं पर अधिक जोर दिया गया है, जबकि पृथ्वीराज के बारे में चंद ही पंक्तियां लिखी जाती हैं। यकीनन, बॉलीवुड के अभिनेता खुद इतिहासकार नहीं हैं और हमें उनकी बातों को गम्भीरता से नहीं लेना चाहिए। आखिरकार, भारत में बनाई गई पहली फिल्म राजा हरिश्चंद्र पर ही थी, जो ऐतिहासिक नहीं तो पौराणिक चरित्र अवश्य हैं। इसे वर्ष 1913 में दादासाहेब फालके ने बनाया था। इतिहास आधारित फिल्में कभी भी आलोचना से परे नहीं थीं। अनारकली पर ही अनेक फिल्में बनाई जा चुकी हैं। इन्हीं में से एक फिल्म 1928 की थी, जिसमें रूबी मेयर्स उर्फ सुलोचना ने मुख्य भूमिका निभाई थी। इसके प्रदर्शन पर मेंगलौर के डीएम ने पाबंदी लगा दी थी, क्योंकि उस साल वहां साम्प्रदायिक दंगे हुए थे। जल्द ही फिल्म पर पूरे देश में रोक लगा दी गई। अगर आज के आसिफ से अनारकली की प्रामाणिकता के बारे में पूछा जाता तो वो भी एक लेखक की ही शरण में जाते-इम्तियाज अली ताज, जिनके 1922 में लिखे गए नाटक पर मुगले आजम आधारित थी। लेकिन द्विवेदी कह रहे हैं, अबुल फजल जो कह दें, फैजी जो कह दें, वो सही, चंदबरदाई कह दें तो गलत। द्विवेदी यह संकेत करना चाह रहे हैं कि अकबरनामा जो कि मुगल बादशाह की अधिकृत जीवनी है के लेखक फैजी और चंदबरदाई समकक्ष हैं, जबकि फैजी और चंदबरदाई दोनों ही इतिहासकार नहीं, राजकवि थे। उनका तर्क यह है कि या तो अबुल फजल और चंदबरदाई दोनों की कृतियों को इतिहास मानें या किसी को भी नहीं। सच तो ये है कि अतीत इतना महत्वपूर्ण है कि इसे शौकिया इतिहासकारों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। शायद फिल्मकारों को शौर्य से जुड़ी कहानियां खोजने के लिए अतीत में जाने के बजाय वर्तमान पर ही केंद्रित होना चाहिए। इतिहासकारों को ही सच बताने का काम करने दें।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

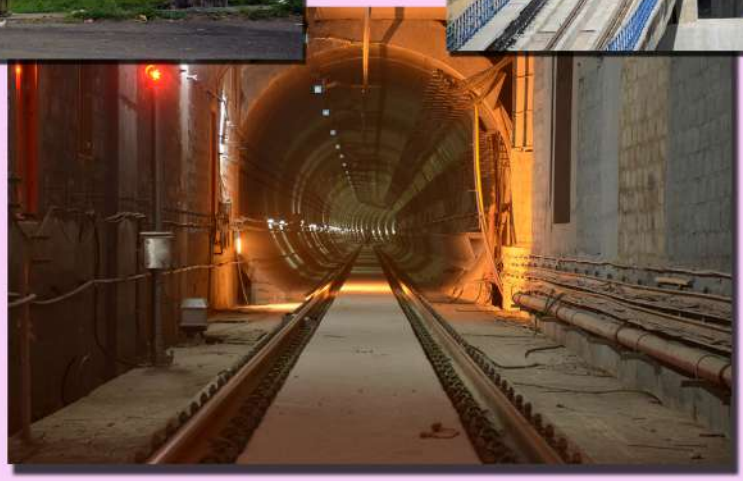

J.KUMAR INFRAPROJECTS LTD

We dream.....So we achieve....

* TRANSPORTATION ENGINEERING
* CIVIL CONSTRUCTION
* PILLING DIVISION
* IRRIGATION PROJECTS
* R.M.C. DIVISION

आर्थिक और राजनैतिक बदलाव से गुजरता पड़ोसी देश नेपाल

– चंद्रा डी. भट्टा

लोकतांत्रिक बदलाव की तरफ नेपाल की यात्रा एक जैसी नहीं रही है। 40 के दशक के आखरी हिस्से से शुरू होकर 70 वर्षों के इतिहास में नेपाल ने सात संविधान देखे हैं और तब से किसी भी निर्वाचित प्रधानमंत्री ने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया है। इस संबंध में कम–से–कम तीन तरह की अस्थिरताएं देखी जा सकती है: कार्यकारी,

आर्थिक कायाकल्प से जुड़े मुद्दे पार्टी के बाहर और भीतर के संघर्षों की वजह से फीके पड़ जाते हैं। ये संघर्ष न सिर्फ बहुदलीय लोकतंत्र की छवि को नुकसान पहुंचा रहे हैं बल्कि राजनीतिक प्रणाली में लोगों के भरोसे पर भी असर डाल रहे हैं।

विधायी और संवैधानिक। अब अगर नजर डालें तो लगता है कि नेपाल के ताजा संविधान, जिसका मसौदा संविधान सभा के जरिए तैयार किया गया था और जिसकी घोषणा 2015 में की गई थी, ने कुछ महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दों का समाधान किया है लेकिन आर्थिक विकास से जुड़े बड़े सवालों का समाधान करना अभी भी बाकी है। आर्थिक कायाकल्प से जुड़े मुद्दे पार्टी के बाहर और भीतर के संघर्षों की वजह से फीके पड़ जाते हैं। ये संघर्ष न सिर्फ बहुदलीय लोकतंत्र की छवि को नुकसान पहुंचा रहे हैं बल्कि राजनीतिक प्रणाली में लोगों के भरोसे पर भी असर डाल रहे हैं। इसी तरह पूंजी निर्माण की पूरी प्रक्रिया पर कुलीन या पूंजीवादी तबके के छोटे से लोगों का एकाधिकार/कब्जा हो गया है जो न सिर्फ.अर्थव्यवस्था बल्कि दलगत राजनीति पर भी नियंत्रण करते हैं।

इसके अलावा कुछ बाहरी कारण भी हैं जिनका घरेलू राजनीति को (फिर से) तय करने में बड़ा योगदान है। इसकी मुख्य वजह नेपाल की भौगोलिक स्थिति है जो दो बड़ी शक्तियों– चीन और नेपाल के बीच है। विकास और दूसरी गतिविधियों के लिए बाहरी दुनिया पर नेपाल की भारी निर्भरता हालात को और भी खराब बनाती है क्योंकि इसकी वजह से अंतर्राष्ट्रीय राजनीति एवं नीति में नेपाल को अपनी बात रखने का मौका नहीं मिल पाता। ये लेख नेपाल में सफल राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तन के विषय में राजनीति, भू–राजनीति, अर्थव्यवस्था एवं दूसरे कारणों के बीच इंटरफेस की चर्चा करता है।

नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर का संघर्ष इतना गंभीर हो गया कि उसने उत्तर, दक्षिण और पश्चिम के दूर-दराज के देशों जैसे अमेरिका और उसके सहयोगियों को इस चर्चा में खींच लिया जहां वास्तविक और काल्पनिक- दोनों तरह के मुद्दों को कम करके आंका गया।

राजनीति और भू–राजनीति के बीच इंटरफेस

2015 में संविधान की औपचारिक घोषणा के बाद नेपाल ने नई राजनीतिक व्यवस्था को चुना और सभी तीन स्तरों– संघीय, प्रांतीय और स्थानीय स्तर पर नेपाल में चुनाव हुए। 2018 में नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एनसीपी) के नेतृत्व में नई सरकार का गठन हुआ लेकिन 90 के दशक की तरह ये सरकार भी मुख्य रूप से एनसीपी के आंतरिक संघर्षों की वजह से कार्यकाल पूरा होने से पहले ही गिर गई। एनसीपी के संघर्ष की वजह से पार्टी दो भागों में बंट गई थी– नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी एकीकृत मार्क्सवादी एवं लेनिनवादी (सीपीएन–यूएमएल) और नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी केंद्र। 2018 में दोनों गुटों ने एक होने का फैसला लिया और एनसीपी का गठन हुआ। वैसे तो जब से कम्युनिस्ट पार्टियां नेपाल के राजनीतिक परिदृश्य में आई हैं, तब से उनका पूरा इतिहास बंटवारे और फिर से एकीकरण से भरा हुआ है। शायद यही वजह है कि

ज्यादातर कम्युनिस्ट पार्टियां अपने नाम के आगे यूनाइटेड (एकीकृत) शब्द लगाती हैं।

नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर का संघर्ष इतना गंभीर हो गया कि उसने उत्तर, दक्षिण और पश्चिम के दूर-दराज के देशों जैसे अमेरिका और उसके सहयोगियों को इस चर्चा में खींच लिया जहां वास्तविक और काल्पनिक-दोनों तरह के मुद्दों को कम करके आंका गया।

इसने केवल एक से ज्यादा तरीकों से भू-राजनीति को और भी बढ़ाया। तब भी नेपाल के लिए इस भू-राजनीतिक बवंडर से बाहर निकलना मुश्किल लगने लगा। इसकी वजह ये है कि नेपाल की भू-राजनीति पर राजनीतिक दलों द्वारा अपनाई जाने वाली वैचारिक स्थिति का ज्यादा असर है। ये वो समय भी था जब नेपाल ने चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के साथ-साथ अमेरिका के द्वारा शुरू किए गए मिलेनियम चैलेंज कॉरपोरेशन (एमसीसी) पर भी दस्तखत किए। इन दोनों योजनाओं का उद्देश्य नेपाल में आधारभूत ढांचे का निर्माण करना है, कम-से-कम सैद्धांतिक स्तर पर, लेकिन इसमें भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक पहलुओं की भी भूमिका है। कारण अच्छा हो या खराब लेकिन इसकी वजह से नेपाल की राजनीति इस हद तक बंट गई कि राजनीतिक परिवर्तन के समय के दौरान सभी दूसरे महत्वपूर्ण मुद्दों को नजर अंदाज कर दिया गया। इस भू-राजनीतिक प्रतियोगिता का परिणाम अक्सर पड़ोस के देशों के साथ नेपाल के संबंधों पर भी पड़ा। इसका एक प्रमुख उदाहरण है 2020-2021 में भारत के साथ सीमा विवाद और बाद में चीन के साथ भी सीमा विवाद। कई लोगों का मानना है कि इस सीमा विवाद का समय निश्चित रूप से इस क्षेत्र में व्यापक भू-राजनीतिक प्रतियोगिता के मुताबिक था। तब भी इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि दोनों देशों के साथ नेपाल का सीमा विवाद है। 2020-2021 में जो हुआ वो 90 के दशक में हुई राजनीतिक घटनाओं को फिर से दोहराने की तरह है। उस वक्त विदेश नीति का इस्तेमाल आंतरिक राजनीति में औजार की तरह किया गया था। एक साथ देखा जाए तो हाल के वर्षों में हुई घटनाओं की वजह से

पश्चिमी देशों ने नेपाल में लोकतंत्रीकरण और विकास के मामले में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है लेकिन उनका रवैया इस तरह की मदद का इस्तेमाल अपने सामरिक हितों को पूरा करने वाला रहता है। इसके लिए वो नेपाल को लॉन्चिंग पैड की तरह उपयोग करते हैं, जिसका असर फिर से वहां की आंतरिक राजनीति में भी देखा जा सकता है।

दो बार संसद को भंग किया गया। हालांकि दिलचस्प बात ये है कि 2020-21 में दोनों ही बार सर्वोच्च न्यायालय ने संसद को फिर से बहाल कर दिया। लेकिन, इसकी वजह से एनसीपी के नेतृत्व वाली दो-तिहाई बहुमत की सरकार गिर गई और बाद में नेपाली कांग्रेस पार्टी जिसके पास 275 सदस्यों के सदन में सिर्फ 61 सांसद थे, ने गठबंधन के सहयोगियों के साथ मिलकर सरकार बनाई। नेपाली कांग्रेस पार्टी के ज्यादातर सहयोगी वामपंथी विचारधारा को मानने वाले हैं और अब इन सहयोगी दलों की मदद से 2018 में निर्वाचित नेपाल की संसद पहली बार अपना कार्यकाल पूरा करने जा रही है। पश्चिमी देशों ने नेपाल में लोकतंत्रीकरण और विकास के

मामले में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है लेकिन उनका रवैया इस तरह की मदद का इस्तेमाल अपने सामरिक हितों को पूरा करने वाला रहता है। इसके लिए वो नेपाल को लॉन्चिंग पैड की तरह उपयोग करते हैं जिसका असर फिर से वहां की आंतरिक राजनीति में भी देखा जा सकता है।

इसके अलावा बाहरी माहौल नेपाल के लिए हमेशा प्रतिकूल रहे हैं और इसकी वजह इस क्षेत्र में भू–राजनीतिक उपक्रमों के उच्च स्तर हैं। इसके कारण नेपाल के दोनों बडे.पडोसी देशों: चीन और भारत को मजबूर होकर राजनीतिक प्रणाली और नेपाल के साथ संबंधों को लेकर अपना विचार बनाना पड़ता है। पश्चिमी देशों ने नेपाल में लोकतंत्रीकरण और विकास के मामले में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है लेकिन उनका रवैया इस तरह की मदद का इस्तेमाल अपने सामरिक हितों को पूरा करने वाला रहता है। इसके लिए वो नेपाल को लॉन्चिंग पैड की तरह उपयोग करते हैं जिसका असर फिर से वहां की आंतरिक राजनीति में भी देखा जा सकता है। इस प्रकार लोकतांत्रिक राजनीति और राजनीतिक स्थिरता का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि किस तरह राजनीतिक दल घरेलू राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, जिनमें चीन, भारत और पश्चिमी देशों के साथ संबंध शामिल हैं, के बीच संतुलन स्थापित करते हैं। जहां नेपाल की भौगोलिक स्थिति और सांस्कृतिक अपनापन उसके दो महत्वपूर्ण पड़ोसियों– भारत और चीन के साथ नजद्रीकी संबंध और बारीक संतुलन की अपेक्षा रखते हैं, वहीं लोगों की आजीविका अब धीरे–धीरे इस क्षेत्र से आगे की ओर बढ़ रही है। इसकी वजह राजनीतिक अर्थव्यवस्था के द्वारा लाया गया बदलाव है। नेपाल को पश्चिमी देशों के साथ भी मैत्रीपूर्ण संबंध बरकरार रखने हैं जो न सिर्फ.लंबे समय से विकास के मामले में उसका साझेदार रहे हैं बल्कि पश्चिमी देशों में नेपाली के प्रवासी नागरिकों की संख्या और बातचीत के स्तर में भी असाधारण बढ़ोत्तरी हुई है। साथ ही जहां तक बात चीन और भारत के साथ नेपाल के संबंधों की है तो वो दोनों देशों के बीच सभ्यता और सांस्कृतिक नजद्रीकी की वजह से उनके साथ समान संबंध रखने का खतरा नहीं उठा सकता है।

आर्थिक पहेली

नेपाल की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है। नेपाल के संविधान में 31 मौलिक अधिकार दिए गए हैं लेकिन नौजवानों की आबादी को देखते हुए अधिकार आधारित संविधान की न्यूनतम आवश्यकताओं को तो छोड.दीजिए, पर्याप्त आर्थिक गतिविधियां भी नहीं हो रही हैं। वैसे तो संविधान की प्रस्तावना में एक **सामाजिक–लोकतांत्रिक राज्य** पर जोर दिया गया है लेकिन सामाजिक अंश या तो गायब हैं या उन्हें नीतियों और कार्यक्रमों के जरिए यदा–कदा ही लागू किया जाता है। ◆◆◆

क्या सोडियम ही वो तत्व है जिसके जरिये हम, इलेक्ट्रिक वाहन मोबिलिटी की तरफ सफलतापूर्वक आगे सकते हैं?

– कुशन मित्रा

इलेक्ट्रिक गतिशीलता (मोबिलिटी) की ओर बढ़ने के बारे में विचार करते समय एक महत्वपूर्ण तथ्य चीन का उन संसाधनों पर वर्चस्वकारी नियंत्रण है जिनकी जरूरत इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए है। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर बढ़ने को अपनी राज्य नीति का एक अहम औजार बनाया है। उसने देश भर में चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए अरबों डॉलर लगाये हैं।

यह चेतावनी हर जगह मौजूद है कि ज्यादा सोडियम सेहत के लिए हानिकारक है। विज्ञापनों से लेकर डाक्टर तक हमें कम सोडियम वाला नमक अपनाने की सलाह देते हैं। लेकिन यह सोडियम ही है जो हरित ऊर्जा परिवर्तन में पर्यावरण का तारणहार बनकर सामने आ सकता है। अभी तक, इलेक्ट्रिक वाहनों में इस्तेमाल हो रही बैटरियां लिथियम–

आयन केमिस्ट्री पर आधारित हैं। लिथियम आधारित बैटरियों को लिथियम तत्व के कम वजन का फायदा मिलता है, लेकिन इनकी तापीय स्थिरता को लेकर कई अहम मसले हैं। और इससे भी ज्यादा बड़े मसले संसाधनों को लेकर हैं, क्योंकि इन बैटरियों में लिथियम का इस्तेमाल अकेले नहीं, बल्कि दूसरी धातुओं और खनिजों के साथ किया जाता है जिनकी अपनी संसाधन संबंधी समस्याएं हैं।

वैश्विक वाहन उद्योग द्वारा इस्तेमाल की जा रही सबसे लोकप्रिय बैटरी केमिस्ट्री को लिथियम-निकल, मैंगनीज और कोबाल्ट (Li-NMC) के रूप में जाना जाता है। पूरी दुनिया में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए मांग में हुई नाटकीय वृद्धि ने लिथियम की कमी पैदा कर दी है। हाल में हाजिर बजार में इसकी कीमतों ने 60,000 अमेरिकी डॉलर प्रति टन और इससे ऊपर का स्तर छुआ है। कीमतें एक साल में चार गुना हो गयी हैं। कोबाल्ट, जिसका खनन मुख्य रूप से कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में होता है, को नैतिक स्रोतों से हासिल करने के बारे में लगातार बरकरार चिंताओं का भी निवारण नहीं हो पा रहा है। यूक्रेन में हालिया युद्ध ने कुछ दिनों के अंतराल में निकल की कीमतों में 10 गुना वृद्धि कर दी है, जिसके चलते लंदन मेटल एक्सचेंज में इस धातु में कारोबार को रोकना तक पड़ा है। इसने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए बैटरी पैक की कीमतों में वर्षों से आ रही गिरावट थम गयी और बीते कुछ महीनों में इसमें 10 से 20 फीसद की बढ़ोत्तरी हुई है।

> **"पूरी दुनिया में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए मांग में हुई नाटकीय वृद्धि ने लिथियम की कमी पैदा कर दी है. हाल में हाजिर बाजार में इसकी कीमतों ने 60,000 अमेरिकी डॉलर प्रति टन और इससे ऊपर का स्तर छुआ है।**

पूरी दुनिया में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए मांग में हुई नाटकीय वृद्धि ने लिथियम की कमी पैदा कर दी है। हाल में हाजिर बाजार में इसकी कीमतों ने 60,000 अमेरिकी डॉलर प्रति टन और इससे ऊपर का स्तर छुआ है। कीमतें एक साल में चार गुना हो गयी हैं।

Li-NMC बैटरियों की लागत 2010 में 1200 अमेरिकी डॉलर प्रति किलोवाट घंटा थी, जो 2021 में घटकर 132 डॉलर/kWh के निचले स्तर तक पहुंच गयी थी (और अनफिनिश्ड बैटरियों के लिए प्रति-सेल आधार पर कीमतें 100 डॉलर/kWh तक नीचे थीं)। 2022 में वैश्विक बाजार में कीमतें 200 डॉलर/kWh के करीब पहुंच गयी हैं। लिथियम के साथ ही सेमीकंडक्टर की वैश्विक कल्लित का मतलब है 2024-25 तक बैटरियों की कमी होना। इसके बाद 2027-2028 तक कच्चे माल का अभाव होगा।

यह लिथियम-फेरो-फास्फेट (LFP) केमिस्ट्री बैटरियों की ओर धीरे-धीरे बढ़ने के बावजूद है। LFP बैटरियां हालांकि Li-NMC बैटरियों के मुकाबले वजनी हैं और 'बैटरी मेमोरी' से जुड़े मसले भी इनके साथ हैं, लेकिन इनके लिए Li-NMC बैटरियों से कम संसाधनों की ज.रूरत है। लोहा और फास्फेट अपेक्षाकृत काफी सस्ते हैं और इनका निष्कर्षण व शोधन उन धातुओं के मुकाबले पर्यावरण हितैषी है जिनका इस्तेमाल Li-NMC बैटरियों में होता है। इलेक्ट्रिक व्हीकल बैटरी मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर (बीएमएस), जिसका अधिकांश भाग हैदराबाद और बेंगलुरू जैसे भारत के तकनीकी केंद्रों में लिखा गया है, ने LFP सेल के साथ पहले की समस्याओं को कम कर दिया है। यही वजह है कि टोयोटा मोटर कॉरपोरेशन, डेन्सो, पैनासोनिक और तोशिबा के साथ मिलकर भारत की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी मारुति-सुजुकी गुजरात में एक ऐसी सुविधा स्थापित कर रही है जो LFP सेलों का इस्तेमाल कर फिनिश्ड बैटरी पैक का निर्माण करेगी, हालांकि अभी के लिए ये सेल चीनी कंपनी बीवाईडी से आयात किये जायेंगे।

चीन का दबदबा

इलेक्ट्रिक गतिशीलता (मोबिलिटी) की ओर बढ़ने के बारे में विचार करते समय एक महत्वपूर्ण तथ्य, चीन का उन संसाधनों पर वर्चस्वकारी नियंत्रण है जिनकी जरूरत इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए है। चीन की

कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर बढ़ने को अपनी राज्य नीति का एक अहम औजार बनाया है। उसने देश भर में चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए अरबों डॉलर लगाये हैं। इलेक्ट्रिक दोपहिया से लेकर बड़े वाणिज्यिक वाहनों तक के चीनी विनिर्माताओं को विनिर्माण पर सब्सिडी दी है। और, इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए जरूरी संसाधनों का पूरी दुनिया से अधिग्रहण सुनिश्चित करना उसके विदेश नीति का एक अहम लक्ष्य है। चीन के पास दुनिया के सबसे बड़े लिथियम भंडारों में से एक है, इसके बावजूद चीनी कंपनियां ऑस्टेलिया में लिथियम खानों को नियंत्रित करती हैं और दक्षिण अमेरिका में भी नियंत्रण बढ़ा रही हैं। चीन आज कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में होने वाले ज्यादातर कोबाल्ट खनन को भी नियंत्रित करता है। इलेक्ट्रॉनिक पुर्जों के लिए जरूरी दुर्लभ मृदा धातुओं पर उसका वर्चस्वकारी नियंत्रण है। नतीजतन, सीएटीएल, बीवाईडी और गैंगफेंग लिथियम जैसी कंपनियों के साथ चीन का लिथियम-सेल विनिर्माण में दबदबा है, जो वैश्विक सेल उत्पादन का तीन-चौथाई है। हालांकि, फिनिश्ड बैटरी पैक अक्सर दूसरी जगहों पर बनते हैं। चार्जिंग सिस्टम के विनिर्माण में भी चीन का दबदबा है।

इलेक्ट्रिक गतिशीलता (मोबिलिटी) की ओर बढने के बारे में विचार करते समय एक महत्वपूर्ण तथ्य, चीन का उन संसाधनों पर वर्चस्वकारी नियंत्रण है जिनकी ज. रूरत इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए है। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर बढ़ने को अपनी राज्य नीति का एक अहम औजार बनाया है। उसने देश भर में चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए अरबों डॉलर लगाये हैं।

इलेक्ट्रिक गतिशीलता को लेकर चीन के रवैये को सबसे बढ़िया ढंग से इलॉन मस्क की टेस्ला मोटर्स के साथ उसके व्यवहार में देखा जा सकता है। चीनी राजतंत्र के उच्च स्तरों पर यह एहसास है कि इलेक्ट्रिक वाहन विनिर्माण और सॉफ्टवेयर में आधुनिकतम तकनीकें हासिल करने के लिए कुछ रियायतें देनी होंगी। लिहाजा, टेस्ला को चीन में पूर्ण स्वामित्व वाली सब्सिडरी कंपनी स्थापित करने की विशेष अनुमति दी गयी, जबकि दूसरे अन्य ऑटोमोबाइल विनिर्माताओं के लिए चीनी साझेदारों के साथ ज्वाइंट वेंचर का गठन

> **खासकर सार्वजनिक परिवहन और दोपहिया क्षेत्र में दिल्ली और महाराष्ट्र जैसी राज्य सरकारों ने भी उदार प्रोत्साहन पैकेज दिये हैं।**

जरूरी था। टेस्ला की 'गीगाफैक्ट्री' ने 484,130 वाहन उत्पादित किये, जो इस कार निर्माता के वार्षिक उत्पादन का आधा है। टेस्ला की चीनी बाजार में भी मजबूत स्थिति है और उसने चीन में इलेक्ट्रिक कारों को लोकप्रिय बनाने में एक बड़ी भूमिका निभायी है। हालांकि, अब शंघाई ऑटोमोबाइल इंडस्ट्रियल कॉरपोरेशन (एसएआईसी), जो भारत में एमजी ब्रांड के तहत कार बेचता है और बीवाईडी जैसे चीन के अपने कार-निर्माता खुद के दम पर बड़े वैश्विक खिलाड़ी बन रहे हैं और दोनों कंपनियां भारत में भी काम कर रही हैं। बीवाईडी की पूर्ण-एकीकृत मैन्युफैक्चरिंग चेन है जो लिथियम-आयन सेल से लेकर फिनिश्ड कार, ट्रक, बस तक सब कुछ बनाती है। बाइडेन प्रशासन लिथियम और दूसरी महत्वपूर्ण धातुओं और खनिजों का खनन शुरू करने के लिए कदम उठा रहा है, लेकिन पर्यावरणीय चिंताओं के चलते प्रगति धीमी है। भारत लिथियम और दूसरे पदार्थों के भंडार की खोज में बहुत धीमा रहा है, खासकर राष्ट्रीय हित के दृष्टिकोण से, गाड़ियों से शून्य उत्सर्जन की ओर बढ़ने की इच्छा की बात तो जाने ही दीजिए। नीतिगत मामलों ने मांग-पक्ष को पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित नहीं किया है, खासकर यात्री कारों के मामले में, जो चाहे अच्छा हो या बुरा, परिवहन क्षेत्र में स्वर्ण मानदंड बनी हुई हैं। भारत में कारखाना स्थापित करने के लिए ईलॉन मस्क और टेस्ला की बेढंगी कोशिश इसका सबूत है। फिर भी, फेम-1 और फेम-2 प्रोत्साहनों ने अपनी भूमिका अदा की है और भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या बढ़ रही है, खासकर सार्वजनिक परिवहन और दोपहिया क्षेत्र में।

दिल्ली और महाराष्ट्र जैसी राज्य सरकारों ने भी उदार प्रोत्साहन पैकेज दिये हैं। हालांकि, सब्सिडी एक स्तर तक सीमित है, इसलिए बड़े वाहनों की बिक्री पर इसका कोई असर नहीं पड़ा है या बहुत कम पड़ेगा है। लेकिन इसने इलेक्ट्रिक दोपहिया की बिक्री को बढ़ावा देने में मदद की है। हालांकि, कुछ लोगों को संदेह है कि हाल में आग लगने की घटनाओं की बाढ़ की वजह इलेक्ट्रिक दोपहिया क्षेत्र में ऐसे कई नये खिलाड़ियों का आना है जो घटिया उत्पाद असेंबल करने वाले व्यापारियों से ज्यादा कुछ नहीं हैं। चीन और कई अन्य देशों के उलट, भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री पर आंतरिक दहन इंजन वाले आम वाहनों के मुकाबले निम्न कराधान दर लागू नहीं है। वित्त मंत्रालय को पूरी तरह बने इलेक्ट्रिक वाहनों पर आयात शुल्क में कटौती करना कतई नापसंद रहा है, जिसके चलते जो 'किआ ईवी' अमेरिका में 54,000 डॉलर (वर्तमान विनिमय दर पर 42 लाख रुपये के करीब) की पड़ती है।

◆◆◆

a2zonlineservices.com

PROJECT MANAGEMENT & CONSTRUCTION MANAGEMENT

ARCHITECTURAL DESIGN SERVICES | INTERIOR DESIGN

A2Z ONLINE SERVICES PRIVATE LIMITED

Tech Park One, Tower ‘E’, 191 Yerwada, Pune-411 006 (INDIA)

> प्रतिभाशाली नौजवानों को आकर्षित करने के लिए इस योजना में स्थायी नौकरी- जो केवल हर साल भर्ती होने वाले रंगरूटों में से केवल 25 फीसद को हासिल होगी- के साथ-साथ कई आकर्षक वित्तीय पैकेज की भी व्यवस्था की गई है।

अग्निपथ

एक नई, क्रांतिकारी और साहसिक रक्षा भर्ती योजना!

– लक्ष्मण कुमार बेहेरा

जून 2022 में केंद्रीय कैबिनेट ने सैन्य बलों में भर्ती के लिए उस अग्निपथ योजना को मंजूरी दी, जिसे आजाद भारत में रक्षा क्षेत्र में भर्ती की सबसे बड़ी सुधारवादी योजना कहा जा सकता है। ये योजना फौरन लागू हो गई और अब थलसेना, वायुसेना और नौसेना में 17.5 साल से लेकर 21 बरस तक के नौजवानों की चार साल के लिए भर्ती इसी योजना के तहत होगी। नई योजना के तहत सैन्य बलों में भर्ती होने वाले युवाओं को **अग्निवीर** के नाम से जाना जाएगा और उनकी भर्ती पूरे देश और हर तबके से होगी। ये नई योजना अब से पहले लागू रही भर्ती की नीति से बिल्कुल अलग होगी, क्योंकि पहले की योजना में रंगरूटों को पेंशन के साथ रिटायर होने से पहले कम से कम 17 बरस तक सेनाओं में नौकरी करनी होती थी। इस योजना की परिकल्पना इस तरह से की गई है कि इसके जरिए सैन्य बलों में क्रांतिकारी बदलाव आएगा और वो ऐसी नई प्रतिभाओं को आकर्षित करेंगे, जो मौजूदा तकनीकों से वाकिफ होंगे, जिससे तीनों सेनाएं तकनीक के क्षेत्र में महारथी बनने की दिशा में आगे बढ़ेंगी और उनमें युवा जोश भी भर सकेगा।

प्रतिभाशाली नौजवानों को आकर्षित करने के लिए इस योजना में स्थायी नौकरी- जो केवल हर साल भर्ती होने वाले रंगरूटों में से केवल 25 फीसद को हासिल होगी-के साथ-साथ कई आकर्षक वित्तीय पैकेज की भी व्यवस्था की गई है। अग्निवीरों को नौकरी छोड़ते वक्त लगभग 11.71 लाख रुपए की सेवा निधि भी मिलेगी।

अग्निपथ योजना और इसके पीछे के तर्क

प्रतिभाशाली नौजवानों को आकर्षित करने के लिए इस योजना में स्थायी नौकरी- जो केवल हर साल भर्ती होने वाले रंगरूटों में से केवल 25 फीसद को हासिल होगी- के साथ-साथ कई आकर्षक वित्तीय पैकेज की भी व्यवस्था की गई है. अग्निवीरों को नौकरी छोड़ते वक्त लगभग 11.71 लाख रुपए की सेवा निधि भी मिलेगी।

अग्निपथ योजना, जिसके तहत अकेले इसी साल 46 हजार अग्निवीरों की भर्ती की जाएगी, वो सैन्य बलों के गैर अफसर कॉडर पर लागू होगी। प्रतिभाशाली नौजवानों को आकर्षित करने के लिए इस योजना में स्थायी नौकरी- जो केवल हर साल भर्ती होने वाले रंगरूटों में से केवल 25 फीसद को हासिल होगी- के साथ-साथ कई आकर्षक वित्तीय पैकेज की भी व्यवस्था की गई है। अग्निवीरों को नौकरी छोड़ते वक्त लगभग 11.71 लाख रुपए की सेवा निधि भी मिलेगी। ये रकम टैक्स फ्री होगी। इस सेवा निधि में अग्निवीर और केंद्र सरकार बराबरी का योगदान देंगी। ये सेवा निधि अग्निवीरों के लिए तय किए गए अन्य भत्तों और शहादत व दिव्यांगता के बदले में मिलने वाली रकम से अलग होगी।

इस योजना को मोटे तौर पर दिमाग में दो मुख्य लक्ष्य हासिल करने के लिए घोषित किया गया है। पहला, केवल चार साल की नौकरी वाली ये भर्ती की नीति, सैन्य बलों की औसत उम्र 32 साल से घटाकर 24 से 26 साल तक लाने के लिए लाई गई है। ये कई उच्च स्तरीय कमेटियों द्वारा की गई सिफारिशों पर आधारित है, जिन्होंने भारत के सामने खड़ी

सुरक्षा संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए सेनाओं को और युवा बनाने की वकालत की थी। आज भारत का दो दुश्मन देशों के साथ सीमा विवाद चल रहा है। इस दौरान भारत के सैनिकों को कई बार आमने सामने की लड़ाई करनी पड़ी है। ऐसे में भारत को और खास तौर से थल सेना को और अधिक युवा सैनिकों की दरकार है।

मानव संसाधन पर रक्षा मंत्रालय का खर्च़ कम करने में अग्निपथ योजना बहुत बड़ा योगदान देने वाली है। अग्निवीरों की चार साल की नौकरी होने से कम से कम 75 प्रतिशत अग्निवीरों की तनख्वाह के मद में अधिकतम 40 हजार रुपए देने होंगे। ये रकम वरिष्ठ सैनिकों पर होने वाले खर्च़ की तुलना में बहुत कम होगी।

हालांकि, ये बात आधिकारिक तौर पर नहीं कही गई है, मगर अग्निपथ योजना का दूसरा मकसद, वित्तीय चुनौतियों से निपटना है, जो रक्षा बजट के एक बड़े हिस्से के पेंशन और वेतन के तौर पर खर्च़ हो जाने से पैदा हुई हैं चूंकि सेना में नौकरी का सेवा काल (या न्यूनतम सेवा अवधि) 1960 और 1970 के दशक में सात साल से बढ़ते-बढ़ते 17 साल तक पहुंच गई है और इसके अलावा एक के बाद एक कई केंद्रीय वेतन आयोग की सिफारिशें और वन रैंक वन पेंशन योजना को भी लागू करना पड़ा है। इससे वेतन और पेंशन का बोझ बढ़ता ही गया है। इसे आप इसी मिसाल से समझ सकते हैं कि पिछले दस वर्षों (2011 से 2021) के दौरान रक्षा मंत्रालय के बजट में से पेंशन, भत्तों और वेतन का हिस्सा 50 फीसद से भी कम से बढ़ते-बढ़ते 60 प्रतिशत तक पहुंच गया है। इस वजह से रक्षा बजट के जरिए नए हथियार और उपकरण खरीदने और मौजूदा संसाधनों के रख-रखाव के लिए रकम बचा पाना मुश्किल होता जा रहा है। पहले रक्षा बजट का 36 फीसद इन कामों में व्यय होता था, जो अब घटकर बस 25 प्रतिशत रह गया है। ऐसे में सरकार के सामने एक अजीब मुश्किल ये पैदा हो गई है कि उसके लिए मौजूदा भुगतान करना भी मुश्किल हो गया है।

मानव संसाधन पर रक्षा मंत्रालय का खर्च़ कम करने में अग्निपथ योजना बहुत बड़ा योगदान देने वाली है। अग्निवीरों की चार साल की नौकरी होने से कम से कम 75 प्रतिशत अग्निवीरों की तनख्वाह के मद में अधिकतम 40 हजार रुपए देने होंगे। ये रकम वरिष्ठ सैनिकों पर होने वाले खर्च की तुलना में बहुत कम होगी। चूंकि चार साल बाद तीन चौथाई अग्निवीर रिटायर हो जाएंगे, तो सरकार रिटायरमेंट के बाद दी जाने वाली पेंशन की बड़ी रकम बचा सकेगी। इस पैसे का इस्तेमाल सेना के आधुनिकीकरण और उसके संसाधनों को बेहतर बनाने में किया जा सकेगा, ताकि देश के सामने लगातार बढ़ रहे खतरों का मुकाबला करने की तैयारी बेहतर हो सके।

अग्निपथ योजना के ऐलान के बाद देश के कई हिस्सों में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन, हिंसा और लूट-पाट देखने को मिली है। इसकी प्रमुख वजह एक स्थायी सरकारी नौकरी से मिलने वाली सुरक्षा से महरूम हो जाना रही।

अग्निपथ योजना कितनी क्रांतिकारी है ?

वैसे तो अग्निपथ योजना, 2020 में

> इसके फायदों को देखते हुए, ये कहा जा सकता है कि इनकी घोषणा, योजना के ऐलान के साथ ही कर दी जानी चाहिए थी।

दिए गए उस टूर ऑफ ड्यूटी प्रस्ताव से काफी अलग है, जिसके तहत सैनिकों और अधिकारियों, दोनों की तैनाती तीन साल के लिए की जानी थी। लेकिन, पिछली तमाम समितियों द्वारा दिए गए सुझावों से ये बिल्कुल मेल नहीं खाती है। रक्षा मंत्रालय के पेंशन और वेतन के बढ़ते खर्च को कम करने के सुझाव देने के लिए सरकार द्वारा बनाई गई तमाम समितियों ने कई तरह से सुझाव दिए थे, जिनमें केंद्रीय अर्धसैनिक बलों (CRPF) में समानांतर भर्ती और सैन्य बलों को उस राष्ट्रीय पेंशन व्यवस्था (NPS) के दायरे में लाने के सुझाव दिए गए थे, जो केंद्र सरकार के सभी कर्मचारियों पर लागू होती है। हालांकि अग्निपथ योजना का ऐलान करके सरकार ने सैन्य बलों में गैर अधिकारी स्तर की भर्तियों को लेकर एक साहसिक नजरिया अपनाया है, जो बिल्कुल नया है।

हालांकि सैन्य अधिकारियों को अग्निपथ योजना या किसी अन्य सुधार के दायरे से बाहर रखना, थोड़ी अजीब-ओ-गरीब लगने वाली बात है। तीनों सैन्य बलों में कुल मिलाकर 76 हजार अधिकारियों (जिनमें लगभग 10 हजार पांच सौ मेडिकल ऑफिसर हैं) को किसी भी सुधार के दायरे में न लाने के तर्क पर फिर से विचार करने की ज़रूरत है। निश्चित रूप से अन्य सुधारों की ही तरह अग्निपथ को लागू करने के दौरान भी कुछ दिक्कतें पेश आएंगी। सबसे फौरी चुनौती तो अग्निवीरों के लिए उपयुक्त प्रक्षिक्षण कार्यक्रम तैयार करने की होगी, जिससे उन्हें युद्ध के लिए तैयार किया जा सके।

अग्निपथ का विरोध

अग्निपथ योजना के ऐलान के बाद देश के कई हिस्सों में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन, हिंसा और लूट-पाट देखने को मिली है। इसकी प्रमुख वजह एक स्थायी सरकारी नौकरी से मिलने वाली सुरक्षा से महरूम हो जाना रही। पुरानी भर्ती योजना के तहत जिंदगी भर मिलने वाली पेंशन का भी आकर्षण था, हालांकि, इसका देश की रक्षा तैयारियों पर बुरा असर पड़ रहा था। इन चिंताओं को दूर करने के लिए केंद्र सरकार और कई राज्यों की सरकारों ने अग्निवीरों के लिए कई प्रोत्साहनों का ऐलान किया। इसमें अग्निवीरों के पहले जत्थे की भर्ती में उम्र की दो साल की रियायत देना और कई नौकरियों में अग्निवीरों के लिए आरक्षण शामिल है। ऊपरी तौर पर देखने पर तो यही लगता है कि अब तक नौकरियों में अग्निवीरों के लिए जितने आरक्षण का ऐलान किया गया है, वो चार साल बाद रिटायर होने वाले अग्निवीरों के लिए पर्याप्त होगा। इसके फायदों को देखते हुए, ये कहा जा सकता है कि इनकी घोषणा, योजना के ऐलान के साथ ही कर दी जानी चाहिए थी, जिससे सैन्य बलों में नौकरी की आस लगाए नौजवानों के असुरक्षा बोध को दूर किया जा सकता था।

◆◆◆

अग्निपथ के बजाय पेंशनपथ चाहने वाले कर रहे हैं विरोध

अग्निपथ योजना के कारण देश के सैनिकों की औसत आयु 32 साल से घटकर 26 साल हो सकती है। अग्निवीर कहलाने वाले सैनिकों की नियुक्ति की न्यूनतम आयुसीमा 17.5 वर्ष है।

गैर –अधिकारी रैंक के सशस्त्र बलों की नियुक्ति सम्बंधी सरकार की नई योजना अग्निपथ में अनेक नई और सराहनीय सुविधाएं हैं। अगर इसे ठीक से लागू किया जाए तो यह सेना के तीनों बलों का आधुनिकीकरण करेगी और इससे उनमें तकनीकी रूप से समृद्ध युवाओं की संख्या बढ़ेगी। इसका एक मकसद रक्षा बजट पर आ रहे पेंशन के बोझ को कम करना भी है। अलबत्ता अगले पंद्रह वर्षों तक इसमें किसी कटौती की गुंजाइश नहीं है। पिछली

सेना में नियुक्ति की योजना की तुलना किसी रोजगार गारंटी योजना से करना अभद्रता है। अग्निपथ योजना के कारण देश के सैनिकों की औसत आयु **32** साल से घटकर **26** साल हो सकती है।

योजनाओं के तहत नियुक्त किए गए सैन्य अधिकारी आगामी पंद्रह वर्षों तक रिटायर्ड की श्रेणी में आते रहेंगे और रिटायरमेंट के 40 साल बाद या इससे भी अधिक समय तक पेंशन लेते रहेंगे। एक ऐसे समय में, जब देश के युवाओं को उत्पादक रोजगारों की जरूरत है, यह देखकर आश्चर्य होता है कि विश्लेषकगण और विपक्षी दल इस विचार का समर्थन कर रहे हैं कि देश के पहले ही सीमित संसाधनों को पेंशन देने में खर्च किया जाता रहे! हमारे सैन्यबल देश की सीमा रेखाओं की सुरक्षा करने का सबसे महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। इसमें नियुक्ति की योजना की तुलना किसी रोजगार गारंटी योजना से करना तो अभद्रता ही है। आज दुनिया के अनेक देश अपनी सेना का आधुनिकीकरण कर रहे हैं, उन्हें चुस्त – दुरुस्त और तकनीकी रूप से मजबूत बना रहे हैं। भारत को भी यही करना चाहिए। क्योंकि देश की सीमा रेखाओं की सुरक्षा करना देश की कार्यशक्ति में हर साल सम्मिलित होने वाले युवाओं के एक छोटे से वर्ग को रोजगार और पेंशन गारंटी देने से कहीं ज्यादा जरूरी है। सेना में नियुक्ति की योजना की तुलना किसी रोजगार गारंटी योजना से करना अभद्रता है। अग्निपथ योजना के कारण देश के सैनिकों की औसत आयु 32 साल से घटकर 26 साल हो सकती है। अग्निवीर कहलाने वाले सैनिकों की नियुक्ति की न्यूनतम आयुसीमा 17.5 वर्ष है। इन्हें चार वर्षों के लिए नियुक्त किया जाएगा, जिसमें छह महीने प्रशिक्षण और साढ़े तीन वर्ष सेवा का समय होगा। इनमें से तीन-चौथाई अग्निवीर जब सेवा छोड़ेंगे तो उनके 11 लाख रुपयों की राशि होगी, वहीं हर बैच के एक-चौथाई अग्निवीरों को 15 वर्षों की सेवा के लिए नियुक्त किया जाएगा। मौजूदा वर्ष में अग्निपथ योजना के तहत 46 हजार अग्निवीरों की नियुक्ति की जाएगी। आलोचकों का कहना है कि चार साल के बाद 75 प्रतिशत यानी लगभग 34 हजार सैनिकों को सेवामुक्त करने से समाज के सैन्यीकरण हो जाने का जो युवा रेलगाड़ियां जला रहे हैं और सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुंचा रहे हैं, वे अग्निवीर नहीं बनना चाहते। दु:ख इस बात का भी है कि उनके कृत्य की निंदा नहीं की जा रही है। कृत्य की निंदा तक खतरा है। उनको यह भी लगता है कि सेना से लौटे युवाओं को कोई उत्पादक रोजगार नहीं मिल सकेगा और पेंशन की सुरक्षा के बिना वे हिंसा पर उतारू हो जाएंगे। तमाम तरह की थ्योरियां यह साबित करने के लिए सामने रखी जा रही हैं कि कैसे 15 वर्ष की सेवा के बाद कार्यमुक्त होने वालों को कोई समस्या नहीं होगी, लेकिन 4 वर्ष की सेवा के बाद कार्यमुक्त होने वाले नौकरी नहीं पा सकेंगे और हिंसा पर आमादा हो जाएंगे। जबकि सच्चाई यह है कि मौजूदा योजना के तहत जो युवा 15 वर्षों की सेवा के बाद अपनी मिड थर्टीज में कार्यमुक्त होंगे, उन्हें 4 वर्ष में कार्यमुक्त होने वालों की तुलना अधिक कठिनाई आ सकती है, क्योंकि कोई भी नियोक्ता आपको बता देगा कि जो युवक अभी अपनी अर्ली-ट्वेंटीज में है, वह उस व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक सरलता से नौकरी पा सकता है, जो 15 वर्षों की सेवा के बाद कार्यमुक्त हुआ है। जबकि यह विडम्बना ही है कि देश के अनेक राज्यों में जिन युवाओं ने हिंसक प्रदर्शन किए, उन्होंने तो अभी अग्निपथ योजना के तहत प्रशिक्षण भी नहीं लिया था। हरिवंशराय बच्चन की कविता अग्निपथ की ऐसे अवसर पर याद आती है, जिसमें ये पंक्तियां हैं ये महान दृश्य है/चल रहा मनुष्य है / अश्रु स्वेद रक्त से / लथपथ लथपथ लथपथ / अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ! लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि अग्निपथ योजना के विरोध में जो युवा आंदोलन कर रहे हैं, रेलगाड़ियां जला रहे हैं और सार्वजनिक सम्पति को नुकसान पहुंचा रहे हैं, वे अग्निपथ पर चलकर अग्निवीर नहीं बनना चाहते। वे केवल एक ऐसी नौकरी चाहते हैं, जिसमें सरकार उनकी सहूलियत का खयाल रखे। वे अग्निपथ नहीं पेंशनपथ खोज रहे हैं। दु:ख इस बात का भी है कि उनके कृत्य की निंदा तक नहीं की जा रही है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

◆◆◆

PANCHSHIL
TOWERS
Kharadi Annex, Pune

MODERN ARCHITECTURE.
URBAN LIVING.

Panchshil

3 & 4 BEDROOM APARTMENTS
3 LEVEL PENTHOUSES
5 BEDROOM PODIUM VILLAS

- 14 acres. 9 towers. 34 floors.
- Sizes from approx. 3,000 – 6,000 sq. ft. (265 - 672 sq. mt.)
- Apartments with VRV cooling
- World-class clubhouse
- Nearly 50% of total open area landscaped
- Common areas designed for the physically challenged and the elderly
- Close to EON Free Zone and World Trade Center Pune
- 7 minutes from Kalyani Nagar & Koregaon Park* (*As per new under-construction riverside road connecting CBD to Kharadi and Wagholi)

For enquiries call:
Vikas Sarraf +91 85549 88676
www.panchshil.com

JUNE
21

GO STRESSFREE, GO CASHLESS
THIS YOGA DAY,
WITH **JANKALYAN** ATM CUM DEBIT CARD

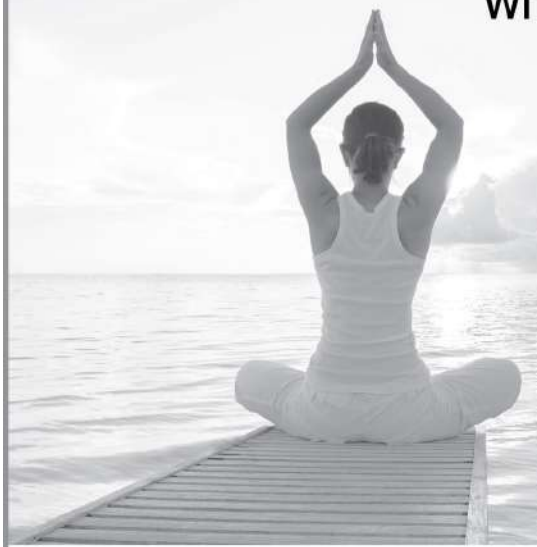

ONE CARD. MANY BENEFITS.

Payments Utility Bill
12 Lakhs + Swipe Machines Across India
Online Bookings
2 Lakhs + ATM'S Across India
Online Shopping
e-Wallet

JANAKALYAN
SAHAKARI BANK LTD
(Scheduled Bank)
Toll Free: 1800 225 381 I www.jksbl.com

DESAI HARMONY

WADALA (W)

MAHA RERA NO.P51900009455

Follow Us On

Swimming Pool

Ample Car Parking

Podium Garden

Health & Fitness Center

Luxurious 2, 3 & 4 BHK Apartments

Centrally located in the heart of the city (Wadala, West), Desai Harmony makes your life convenient as the best of the metropolis surrounds you. It's a two minutes drive from all the major infrastructure facilities and the most happening destinations of Mumbai. **Stay closer to life.**

Call :+91 9209206206 / +91 75061 18929 / +91 98198 51644

E : sales@sparkdevelopers.in | sms Spark Wadala to 56677

Our Projects At : Worli | Andheri | Ghatkopar | Vile-Parle

Site Address : Desai Harmony, G.D Ambekar Marg, Opp. Hanuman Industrial Estate, Near Dadar Workshop, Wadala, Mumbai - 400 031

Corp. Office : 102, Saroj Apartment, 1st Floor, N.P. Marg, Opp. Matunga Gujarati Club, King's Circle, Matunga, Mumbai – 400 019

SPARK DEVELOPERS
creating world for you

www.sparkdevelopers.in

Disclaimer: This advertisement is merely conceptual and is not a legal document. It cannot be treated as a part of final purchase agreement. All dimensions are approximate and subject to construction variances. The developer reserves sole rights to amend architectural specifications during development stages.

पहला राष्ट्रपति दलित समाज से चुना और अब दूसरा राष्ट्रपति आदिवासी समाज से चुने जाने के लिए प्रस्तुत है। इसके पहले भाजपा की ही वाजपेयी सरकार ने एपीजे अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति बनाया था।

गरीब आदिवासी परिवार से अब राष्ट्रपति पद की ओर

– डॉ. वेद प्रताप वैदिक

भारत के 15 वें राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवारों की घोषणा हो चुकी है। विपक्षी दलों ने यशवंत सिन्हा को उम्मीदवार घोषित किया तो भाजपा ने द्रौपदी मुर्मू को उम्मीदवार घोषित कर दिया। जाहिर है कि वर्तमान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को डॉ. राजेंद्र प्रसाद की तरह दूसरी बार राष्ट्रपति होने का मौका नहीं मिला, हालांकि राष्ट्रपति के तौर पर उनका और भाजपा नेतृत्व का संबंध प्रीतिपूर्ण रहा लेकिन भाजपा का नेतृत्व इस सर्वोच्च पद के द्वारा यह संदेश देता लग रहा है कि वह उपेक्षित वर्गों को अपूर्व सम्मान देना चाहता है। उसने अपना पहला राष्ट्रपति दलित समाज से चुना और अब दूसरा राष्ट्रपति आदिवासी समाज से चुने जाने के लिए प्रस्तुत है। इसके पहले भाजपा की ही वाजपेयी सरकार ने एपीजे अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति बनाया था। राष्ट्रपति के नाते मुर्मू भले दूसरी महिला राष्ट्रपति हों , लेकिन वे पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति होंगी। उनका महिला और आदिवासी होना उनकी उम्मीदवारी को अति विशिष्ट बनाते हैं। नीलम संजीव रेड्डी के बाद वे पहली उम्मीदवार हैं, जिनकी आयु 64 साल है। भाजपा द्वारा प्रस्तावित उम्मीदवार का राष्ट्रपति बनना

लगभग तय है और विपक्ष के बड़े से बड़े उम्मीदवार का हारना भी तय है। इसीलिए शरद पवार, फारूक अब्दुल्ला और गोपाल गांधी अपनी किरकिरी करवाने से बच निकले लेकिन यशवंत सिन्हा ने विपक्ष के उम्मीदवार बनने के लिए स्वीकृति देकर अच्छा ही किया। वे भारत के वित्तमंत्री और विदेश मंत्री रह चुके हैं और पूर्व आईएएस भी हैं। उन्हें प्रधानमंत्री चंद्रशेखर और अटलबिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में काम करने का अनुभव है। यदि वे संयोगवश राष्ट्रपति बन गए तो उनका और मोदी सरकार का रिश्ता कुछ-कुछ वैसा ही हो सकता है, जैसा कि राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह और राजीव गांधी सरकार का था। द्रौपदी मुर्मू ओडिशा के मयूरभंज की हैं। उनका जीवन संघर्षपूर्ण रहा। झोपड़ी में पैदा होकर राष्ट्रपति भवन तक पहुंचने वाले व्यक्तित्व को देखकर कौन उत्साहित नहीं होगा? बीए के बाद वे शिक्षिका बन गईं। राजनीति में भी पार्षद से शुरू होकर, विधायक, मंत्री पद तक पहुंचीं

द्रौपदी मुर्मू ओडिशा के मयूरभंज की हैं । उनका जीवन संघर्षपूर्ण रहा । झोपड़ी में पैदा होकर राष्ट्रपति भवन तक पहुंचने वाले व्यक्तित्व को देखकर कौन उत्साहित नहीं होगा ? बीए के बाद वे शिक्षिका बन गईं ।

और अब झारखंड की राज्यपाल हैं। वे खुद 64 साल की हैं और यशवंत सिंह 84 के हैं। मोदी सरकार के लिए मुर्मू कहीं अधिक अनुकूल रहेंगी। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के बीच संबंध मधुर या सामान्य बने रहें, यह बहुत जरूरी है। यद्यपि आपातकाल के दौरान किए गए 44 वें संविधान संशोधन के द्वारा राष्ट्रपति के अधिकारों में काफी कटौती कर दी गई थी। **एनडीए प्रत्याशी द्रौपदी मुर्मू भले भारत की दूसरी महिला राष्ट्रपति हों, लेकिन वे पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति होंगी। उनका महिला और आदिवासी होना उनकी उम्मीदवारी को विशिष्ट बनाते हैं।** मंत्रिमंडल की सलाह के अनुसार काम करना राष्ट्रपति के लिए अनिवार्य बना दिया गया था, लेकिन इसके बावजूद प्रधानमंत्री को चुनने, किसी भी कानून को पुनर्विचार के लिए मंत्रिमंडल के पास भेजने, अध्यादेश जारी करने या न करने या किसी कानून पर अंतिम मुहर लगाने का अधिकार आज भी राष्ट्रपति के पास है। इसी कारण 1987 में ज्ञानी जैलसिंह राजीव गांधी को प्रधानमंत्री पद से मुक्त करना चाहते थे। दिल्ली के कई विधि-विशेषज्ञों ने उन्हें वैसी सलाह भी दे दी थी, लेकिन उन्होंने अपने एक मित्र की यह बात सुनकर अपने उस विचार को त्याग दिया कि ज्ञानी जी आप भारत को पाकिस्तान बनाना चाहते हैं क्या? इसका अर्थ यह नहीं कि भारत के राष्ट्रपति की भूमिका रबर के ठप्पे की तरह रहे। अनेक ऐसे राष्ट्रपति हुए हैं, जिन्होंने सरकारों के साथ पूरा सहयोग किया लेकिन समय-समय पर असहमति और अप्रसन्नता व्यक्त करने में कोई कोताही भी नहीं की। भारत के राष्ट्रपति का पद कुछ-कुछ ब्रिटेन के महाराजा की तरह है। उसका मुख्य काम सरकार को सलाह देना और उसका मार्गदर्शन करना है। हर प्रधानमंत्री चाहता है कि राष्ट्रपति सीधा-सरल व्यक्ति हो, जो सरकार के काम काज में अड़ंगेवाजी न करे। कितना अच्छा होता कि ऐसे किसी व्यक्ति को पक्ष और विपक्ष सर्वसम्मति से राष्ट्रपति चुन लेते। भाजपा के नेताओं ने ऐसी कोशिश भी की, लेकिन इस समय प्रमुख विपक्षी दल इस फिराक में हैं कि भाजपा के विरुद्ध एक शक्तिशाली गठबंधन खड़ा कर सकें ताकि अगले चुनाव में उसे शिकस्त दी जा सके। राष्ट्रपति चुनाव उन्हें अवसर प्रदान कर रहा है कि चाहे वे अभी हार जाएं लेकिन 2024 के आम चुनाव में जमकर टक्कर दे सकें। यहां यह भी ध्यातव्य है कि सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी कांग्रेस ने राष्ट्रपति के लिए अपने किसी उम्मीदवार का नाम पेश नहीं किया और एक ऐसे व्यक्ति के नाम पर मोहर लगाई, जो 22 साल तक भाजपा का महत्वपूर्ण सदस्य रहा है ।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

◆◆◆

काम कम नहीं हैं और ना ही करने वाले

बस नई सोच चाहिए

– रश्मि बंसल

डेनमार्क में स्पेशलस्टर्न नाम की आईटी कम्पनी है, जो सिर्फ एस्पर्जर सिंड्रोम से ग्रस्त लोगों को नौकरी देती है। ये एक ऐसी कंडीशन है, जिसमें आपकी आईक्यू तो हाई है, मगर आप अपने में खोए रहते हैं।

रो

ज दुनिया में हजारों–लाखों बच्चे जन्म लेते हैं। बड़े होकर समाज का हिस्सा बनते हैं, अपने लायक कोई काम पकड़ते हैं। कॉम्पीटिशन बहुत है, नौकरी मिलना आसान नहीं। लेकिन एक ऐसा ग्रुप है, जिन्हें काम मिलना मुश्किल नहीं नामुमकिन जैसा है। वो ग्रुप जिन्हें हम डिसएबल्ड कहते हैं, जिनके शरीर या दिमाग में कुछ कमजोरी है। इसलिए ये सुनकर आश्चर्य हुआ कि अमेरिका की कॉफी शॉप चेन

'बिट्टी एंड बो' के 350 एम्प्लायीज में से 90 प्रतिशत डिसएबल्ड हैं। इस कम्पनी के मालिक हैं एक पति-पत्नी, जिनके चार बच्चे हैं। उनमें से दो डाउन सिंड्रोम के साथ पैदा हुए। मां-बाप की एक ही चिंता थी कि आगे जाकर इन बच्चों का क्या होगा? तो एक मकसद से उन्होंने 2016 में पहली कॉफी शॉप खोली। एक से दो, दो से तीन, आज उनकी ग्यारह आउटलेट हैं। और अब वो मैकडॉनल्ड्स की तरह फ्रैंचाइजी भी दे रहे हैं। जहां भी 'बिट्टी एंड बो' खुलता है, लोग उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते। कि हमें तो मालूम ही नहीं था कि जिन्हें हम डिसएबल्ड मानते हैं, वो ऐसा रोल निभा सकते हैं। अब हम यहीं कॉफी पीना चाहेंगे, हमें देखकर अच्छा लगता है। और हां, ये बिजनेस प्रॉफिट कमाता है। ना ही इन्हें एट्रिशन की समस्या है- जो भी नौकरी लेता है, लम्बे समय तक टिकता है। आज-कल ये किसी चमत्कार से कम नहीं। ट्रेनिंग जरूर देनी पड़ती है, मगर वो तो वैसे भी देनी पड़ती। एक तरह से इस एक्सपेरिमेंट ने साबित कर दिखाया कि जिन्हें हम अक्षम का लेबल देते हैं, वो सक्षम हो सकते हैं।

इसी तरह डेनमार्क में स्पेशलस्टर्न नाम की आईटी कम्पनी है, जो सिर्फ एस्पर्जर सिंड्रोम से ग्रस्त लोगों को नौकरी देती है। ये एक ऐसी कंडीशन है, जिसमें आपकी आईक्यू तो हाई है, मगर आप अपने में खोए रहते हैं। सोशल स्किल्स न के बराबर होने की वजह से नौकरी मिलना या रीटेन करना मुश्किल है। तो ऐसे लोगों के साथ कम्पनी फिर बनी कैसे? स्पेशलस्टर्न के मालिक भी एक ऐसे पिता हैं, जिनका बेटा एस्पर्जर सिंड्रोम के साथ पैदा हुआ। पिता आईटी सेक्टर में थे, उन्होंने ऑब्जर्व किया कि लड़का कंसंट्रेशन और डिटेल वाले काम बखूबी करता है। आईटी में जरूरी होती है सॉफ्टवेयर टेस्टिंग, जिसमें यही क्वालिटी चाहिए। और वो काम काफी रिपीटिटिव है, मगर एस्पर्जर सिंड्रोम वालों को वह सूट करता है।

तीसरी कहानी, एक ऐसे नौजवान की जिसका डिसएबल्ड के साथ कोई पर्सनल कनेक्शन नहीं। लेकिन ध्रुव लाकरा को बहरों के लिए दिल में सहानुभूति थी। वो मानते थे कि ये सबसे इनविजिबल कंडीशन है, जिनके लिए कोई अपॉर्च्यूनिटी नहीं। ध्रुव ऑक्सफोर्ड से सोशल आंत्रप्रेन्योरशिप का कोर्स करने के बाद अपना कोई वेंचर खोलना चाहते थे। मगर आइडिया नहीं मिल रहा था। एक दिन घंटी बजी। दरवाजे पर कूरियर बॉय ने दस्तक दी थी। उन्होंने साइन किया और पैकेज ले लिया। तब दिमाग में बत्ती जली कि एक मिनट के इस इंटरेक्शन में कोई बातचीत नहीं हुई। ये एक ऐसा काम है, जो एक बहरा भी कर सकता है। इस इनसाइट के साथ उन्होंने खोली मिरेकल कूरियर नाम की कम्पनी, जो आज गरीब वर्ग के लगभग 50 लोगों को रोजगार देती है।

हमारा काम ए-वन होना चाहिए, यही ध्रुव का मानना है। बस मौका दीजिए, हम करके दिखाएंगे।

क्योंकि, आप एक सोशल कॉज से जुड़े हैं, इसका ये मतलब नहीं कि आप दान मांगने निकले हैं। बड़ी-बड़ी कम्पनीज़ से कॉम्पीट करके ही मिरेकल कूरियर को बिजनेस मिलता है। इसलिए हमारा काम ए-वन होना चाहिए, यही ध्रुव का मानना है। बस मौका दीजिए, हम करके दिखाएंगे। ये हुई ना बात। इसी तरह कई छोटे-बड़े इनिशिएटिव देशभर में चल रहे हैं। लेमन-ट्री होटल ग्रुप के 500 से अधिक एम्प्लायीज़ डिसएबल्ड ग्रुप से हैं और अपनी जिम्मेदारियां अच्छी तरह निभा रहे हैं। वहीं आगरा में शीरोज़ कैफे एसिड-अटैक से जली हुई लड़कियों को सपोर्ट करने के लिए शुरू की गई है।

इनके चेहरे चाहे आज विकृत हों, मगर उन पर मुस्कान वापस आ गई है। जिन्हें हम अपने से अलग समझते हैं, उन्हें समाज में शामिल करना हमारी जिम्मेदारी है। पुण्य कमाइए, और प्रॉफिट भी। आप किसी को पैसा दान देते हैं, वो एक दिन रोटी खाएगा। आप किसी को नौकरी देते हैं, वो रोज खाएगा- और सम्मान के साथ। क्या कोई ऐसा काम आपकी दुकान या फैक्टरी या डिपार्टमेंट में है? जरा सोचिए।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

◆◆◆

रूस, बेलारूस और श्रीलंका के उदाहरण बताते हैं कि तानाशाही महंगा सौदा है

- रुचिर शर्मा
ग्लोबल इन्वेस्टर एवं बेस्ट सेलिंग राइटर

तानाशाह कभी-कभी आर्थिक बूम का कारण बनते हैं, लेकिन इस तरह की हरेक सफलता के पीछे तीन-चार ऐसे भी तानाशाह होते हैं, जो आर्थिक विकास में गतिरोध उत्पन्न करते हैं।

वर्ष 2003 में अपनी न्यूयॉर्क यात्रा के दौरान व्लादीमीर पुतिन ने स्वयं को निवेशकों के सामने एक ऐसे आर्थिक-सुधारक की तरह प्रस्तुत किया था, जो पश्चिमी पूंजीवादियों से संवाद करना चाहता है। उन्होंने सबको बताया था कि रूस एक पेट्रो-स्टेट से बढ़कर है और एक यूरोपियन राष्ट्र के मूल्यों को साझा करता है। यूक्रेन पर हमला करने के बाद वे शब्द भले ही खोखले मालूम होने लगे हों, लेकिन जब उन्होंने ये कहा था, तब वे इसको लेकर संजीदा लगते थे।

1990 के दशक में एक वित्तीय संकटग्रस्त देश की कमान सम्भालने के बाद वे निजीकरण और नियम-कानूनों में ढील पर जोर दे रहे थे। तेल की कीमतों में मिले बूस्ट से सुधारों को गति मिली और रूस की प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2000 में 2 हजार डॉलर से बढ़कर 2010 के दशक के आरम्भ में 16 हजार डॉलर तक पहुंच गई। लेकिन,

> 1950 में दुनिया के देशों में 43 में से 35 ऐसे तानाशाही शासन वाले थे, जहां एक दशक तक 7% से अधिक की विकास दर दर्ज की गई थी।

ताकत और कामयाबी ने पुतिन को बदल दिया। उन्होंने विदेशी फंड प्रबंधकों से मिलना बंद कर दिया।

उनके एक सहयोगी ने मुझे बताया कि इस तरह की मीटिंग्स छोटी ताकतों के लिए ठीक हैं, अमेरिका और रूस जैसी महाशक्तियों के लिए नहीं। वर्ष 2010 में मुझे रूसी अर्थव्यवस्था पर एक बेबाक स्पीच देने के लिए मॉस्को बुलाया गया था। श्रोताओं में पुतिन भी थे। मुझे नहीं पता था कि मेरे सेशन को टीवी पर दिखाया जाएगा। मैंने कहा कि रूस के लिए अपनी सफलता को कायम रखना मुश्किल होगा। एक मिडिल-इनकम मुल्क के रूप में तरक्की करने के लिए रूस को तेल से आगे बढ़ना होगा, बड़ी सरकारी कम्पनियों पर निर्भरता घटानी होगी और व्यापक भ्रष्टाचार की नकेल कसना होगी। अगले दिन मैंने एक पुतिन-समर्थक मीडिया में अपना नाम देखा। मुझे इस बात के लिए फटकार लगाई गई कि मैंने मेहमान होने की गरिमा का निर्वाह नहीं किया और यह कहा गया कि मेरे जैसे विदेशी की हिदायतों के बिना भी रूस का काम चल सकता है।

कुछ माह बाद मैंने जॉर्ज डब्ल्यू बुश का इंटरव्यू लिया। उन्होंने भी यही पाया कि पुतिन पहले व्यावहारिक नेता थे, लेकिन 2000 के दशक के अंत तक वे दम्भी हो गए। मेरी रिसर्च दिखाती है कि लोकतांत्रिक नेताओं की तुलना में तानाशाहों के राज में किसी देश का आर्थिक प्रदर्शन अधिक डावांडोल रहता है। जितने समय तक इस तरह के नेता सत्ता में रहते हैं, आर्थिक स्थिति बिगड़ती ही चली जाती है।

विशेषकर तेल पर आधारित अर्थव्यवस्थाओं में तो यही पाया जाता है। पुतिन में ये तीनों गुण हैं- वे एक तेल-उत्पादक देश में ऐसे तानाशाह हैं, जो एक लम्बे समय से सत्ता में हैं। वास्तव में 2000 के दशक के अंत तक पुतिन लापरवाह हो गए थे और सुधारों के लिए प्रयास करना छोड़ चुके थे। 2014 में क्रीमिया पर धावा बोलने के बाद जब पश्चिम ने उन पर सैक्शंस लगाए तो उन्होंने एक नया बदलाव किया। अब वे विकास को आगे बढ़ाने के बजाय रूस को एक ऐसे मजबूत किले के रूप में तैयार करने में व्यस्त हो गए, जिसमें विदेशी पूंजी का प्रवाह मुश्किल हो जाए। अब नए प्रतिबंधों के दबाव में यह नीति टूटकर बिखरने लगी है। रूस की प्रतिव्यक्ति आय 16 हजार डॉलर के शीर्ष से गिरकर 2022 के अंत तक 10 हजार डॉलर के नीचे चले जाने की ओर अग्रसर है।

तानाशाह कभी-कभी आर्थिक बूम का कारण बनते हैं, लेकिन इस तरह की हरेक सफलता के पीछे तीन-चार ऐसे भी तानाशाह होते हैं, जो आर्थिक विकास में गतिरोध उत्पन्न करते हैं। 1950 में दुनिया के 150 देशों में 43 में से 35 ऐसे तानाशाही शासन वाले थे, जहां एक दशक तक 7% से अधिक की विकास दर दर्ज की गई थी। 138 में से 100 ऐसे भी थे, जहां दशक की विकास दर 3% से धीमी थी। 36 ऐसे थे, जो दशकों तक रैपिड ग्रोथ और निगेटिव ग्रोथ के बीच झूलते रहे थे और इनमें से 75% तानाशाहीपूर्ण थे। इनमें भी अनेक नाइजीरिया, ईरान, सीरिया और इराक जैसे पेट्रो-स्टेट थे। पुतिन रूस को इसी श्रेणी में लेकर जा रहे हैं।

पश्चिमी ताकतें उम्मीद कर रही हैं कि पुतिन रूस के आर्थिक संकट से टूट जाएंगे। उन्हें पता होना चाहिए कि तानाशाहों की यह प्रवृत्ति होती है कि वे राजनीति और अर्थव्यवस्था के सम्बंधों को काटकर अनिश्चितकाल तक सत्ता में बने रह सकते हैं।

◆◆◆

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

असम: 47 लाख लोग प्रभावित

● पीड़ित बोले- ऐसी भीषण बाढ पहली बार देखी मेघालय में भी स्थिति खराब

- 8 दिन में 18 मौतें।
- 32 जिलों के 5424 गांव पानी में डूबे हुए हैं।
- 2 लाख 31 हजार 819 लोगों ने 1425 शिविर में शरण ले रखी है।
- 1 लाख हेक्टेयर से ज्यादा फसल बर्बाद हो चुकी है।

गुवाहाटी असम में बाढ़ का कहर थम नहीं रहा है। राज्य के 35 में से 32 जिले बेहाल हैं। 11 लोगों की मौत डूबने से हो गई। बाढ़ भूस्खलन से जुड़ी घटनाओं में 84 लोगों की मौत हो चुकी है। उधर, मेघालय में भी बाढ़ से 8 दिन में 18 लोगों जान गई है। कई जगह ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियां खतरे के निशान से ऊपर हैं। संवाददाता जब असम के कामरूप जिले के उडियाना गांव पहुंचे, तो बेबसी और तबाही की तस्वीर सामने आई। गांव के 55 साल के मोहम्मद साबिर अली ने कहा, बाढ़ में खेत डूब गए हैं। चावल धान सब कुछ पानी में बह गया। बाढ़ ने हमें चारों तरफ से घेर रखा है। पीने का पानी तक नहीं है। 5 दिन से दाने-दाने को मोहताज हैं। इसी जिले के दोदतिया गांव में रहने वाले नरेश्वर भुइयां ने बताया, हमारा घर पानी में डूब गया है। इससे पहले इतनी भीषण बाढ़ कभी नहीं देखी थी। दूर-दूर तक पानी है, जमीन नजर नहीं आ रही। खाने -पीने का सामान खत्म हो रहा है। इतने पानी में जान की बाजी लगाकर यहां रुके हुए हैं। पानी का स्तर बढ़ रहा है। दो रातों से सो नहीं पाया हूं। अगर नदियों में पानी और बढ़ेगा तो घर छोड़ने के अलावा हमारे पर दूसरा चारा नहीं होगा। संवाददाता गुवाहाटी से राष्ट्रीय राजमार्ग 31 पर आगे बढ़े तो सड़कें की दोनों तरफ गांव डूबे दिखाई दिए हैं। उडियाना, दोदतिया समेत इस इलाके के कई गांवों में सड़कें डूबी हुई है। लोग केले के पेड़ और बांस से बनी नाव से आ जा रहे हैं। स्कूल , हेल्थ सेंटर सब जगह -10 फीट तक पानी भरा हुआ है। केवल ग्रामीण इलाका ही नहीं रंगिया शहर का लगभग पूरा इलाका बाढ़ के पानी में डूबा हुआ है। फातिमा बेगम का गांव भी रंगिया में आता है। 5 दिनों से सड़क किनारे रह रही फातिमा कहती है, हमें कांग्रेस-बीजेपी पर बात नहीं करनी है। कोई नेता क्या ये बताएगा कि बिना राशन के कैसे गुजारा करूंगी। हमारी मदद कीजिए। सब डिविजनल ऑफिसर जावीर राहुल सुरेश ने बताया, भूटान के पहाडी इलाकों में लगातार हो रही बारिश से 3 दिनों से पूरे रंगिया में पानी भर गया है। एक तटबंध भी टूट गया था, जिससे हालात बिगड़ गए। लोगों को बचाने के लिए एनडीआरएफ , स्टेट डिजास्टर की टीम और सेना लगी है।

◆◆◆

जापान: ढील दी, लेकिन लोगों ने मास्क नहीं छोड़ा

जापान की आबादी भले ही दुनिया में सबसे बुजुर्ग हो, बावजूद इसके धनी देशों के मुकाबले यह कोरोना से सबसे कम मृत्युदर रखने में सफल रहा। जापान में प्रति 10 लाख की आबादी पर 246 मौतें हुई। धनी देशों के संगठन ओईसीडी के 38 सदस्य देशों में सबसे कम रहीं। इसके लिए जापान ने तमाम उपाय किए। इनमें तेजी से वैक्सीनेशन, फ्री मेडिकल केयर, लोगों को जागरूक करने और पाबंदियों का पालन करना शामिल है। हालांकि, अन्य देशों की तरह उसकी ओर से अपनाए गए उपाय इसलिए कारगर साबित हुए क्योंकि लोगों ने सरकार का पूरा साथ दिया। केस बढ़ने पर जापानियों ने सख्ती से शारीरिक दूरी बनाए रखी।

चीन, इटली, न्यूजीलैंड जैसे देशों में लागू सख्त लॉकडाउन यहां नहीं लगाना पड़ा। सरकार ने नियमों में ढील दी। फिर भी 90 प्रतिशत लोगों ने मास्क पहनना जारी रखा।

अमेरिका के बराबर हुआ जापान में वैक्सीनेशन

अमेरिका के बराबर जापान में भी मजबूती से वैक्सीनेशन हुआ। यहां 65 साल से ज्यादा के 93% को 2 डोज और 90% को बूस्टर डोज भी लग चुके है। अमेरिका में इस उम्र के 94% लोगों को 2 डोज और 88% को बूस्टर डोज लगे हैं।

◆◆◆

ब्रिटेन और अमेरिका में 1200 उड़ानें रद्द 25 हजार लोग एयरपोर्ट पर फंसे

यूरोप से लेकर अमेरिका तक छुट्टियां मनाने के लिए निकले यात्रियों की एयरपोर्ट पर मुश्किलें स्टाफ संकट के चलते कम नहीं हो रही हैं। ब्रिटेन में तो स्थिति बेकाबू होती जा रही है। वहां लगातार तीसरे हफ्ते एयरपोर्ट पर अफरातफरी का माहौल रहा। यात्रियों का प्रबंधन करने में नाकाम रहे लंदन के हीथ्रो एयरपोर्ट के अधिकारियों को विमानन कंपनियों को अचानक आदेश दिया कि वे अपनी 10 फीसदी उडानें रद्द कर दें। इस कारण करीब 200 उड. ानें प्रभावित हो गई। इससे करीब 1 हजार यात्री फंस गए। यात्रियों के साथ ही एयरपोर्ट पर हजारों सूटकेस का अंबार लग गया है। उन्हें उनके सही मालिक तक पहुंचाने में एक हफ्ते लग सकता है। उधर, अमेरिका में भी जूनटींथ की छुट्टी मनाने निकले लोगों की यात्रा में खलल पड़ गया। वहां 921 उडानें रद्द हुई। इससे

बेल्जियम में एयरपोर्ट बंद

बेल्जियम का ब्रसेल्स एयरपोर्ट बंद कर दिया गया है। वहां सुरक्षाकर्मी हड़ताल पर चले गए हैं। इस कारण कोई उड़ान संचालित नहीं हुई।

10 हजार से ज्यादा लोग एयरपोर्ट पर फंस गए। ब्रिटेन के साथ आयरलैंड , नीदरलैंड्स, फ्रांस में भी सैलानी लगातार उडानें रद्द होने से एयरपोर्ट फंस गए हैं।

दर्द : एयरपोर्ट पर रातें बिता रहे लोग

अमेरिका में इस सप्ताहांत 1000 उड़ानें रद्द कर दी गईं। इन्हें मिलाकर 14 हजार उडानें इस महीने रद्द हो चुकी हैं। अभी फादर्स डे और जूनटींथ की छुट्टी चल रही है। इस मौके पर घूमने निकले लोग रास्तों में या लौटते हुए उड़ानें रद्द होने के चलते एयरपोर्ट पर ही रातें बिताने को मजबूर हो रहे हैं। ब्रिटेन में सैलरी बढ़ाने की मांग पर 40 हजार रेलकर्मी हड़ताल पर जाएंगे। इस कारण देश में 20% ट्रेनें नहीं चलेंगी 5 लाख लोग प्रभावित होंगे। ◆◆◆

अमेरिकी मिडटर्म चुनाव में सत्ता की चाबी भारतीयों के पास

● ट्रम्प-बाइडेन इन्हें लुभाने के लिए कैंपेन पर 390 करोड़ रू. खर्च करेंगे

अमेरिकी मिडटर्म चुनाव से पहले तमाम दुश्वारियों के बीच डोनाल्ड ट्रम्प मजबूत होकर उभर रहे हैं। कैपिटल हिल हिंसा मामले में चल रही कांग्रेस समिति की सुनवाई में यह खुलासा हुआ है कि ट्रम्प ने सत्ता में बने रहने के लिए समर्थकों को हिंसा के लिए उकसाया था। इसके उलट ट्रम्प इस सुनवाई को अपने पक्ष में भुना रहे हैं। इसका इस्तेमाल अपना समर्थक बेस बढ़ाने और फंड जुटाने में कर रहे हैं। विश्वसनीय सर्वे बताते हैं कि 55% अमेरिकियों का मानना है कि ट्रम्प इस हिंसा के लिए जिम्मेदार नहीं थे। ऐसे में अमेरिकी मिडटर्म चुनाव में कांटे की टक्कर की उम्मीद है । ऐसे में बीते राष्ट्रपति चुनाव में किंग

मेकर बनकर उभरे भारतीय को अपने पक्ष में लाने के लिए डेमोक्रेटिक व रिपब्लिकन दोनों ही दल करोड़ों रुपए खर्च कर चुके हैं। नवंबर में चुनाव तक 50 मिलियन डॉलर (करीब 390 करोड़ रु.) खर्च करेंगे। राष्ट्रपति चुनाव में भारतीयों की बड़ी आबादी ने बाइडेन को वोट दिया था। ऐसे में ट्रम्प की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए डेमोक्रेट भारतीय वोट खोने का जोखिम नहीं उठाना चाहते है। डेमोक्रेटिक पार्टी ने स्विंग स्टेट्स (जहां नजदीकी मुकाबला होता है) जैसे एरिजोना, जॉर्जिया, नेवादा, पेंसिलवेनिया में भारतीयों को जोड़ने की जिम्मेदारी सिनसिनाटी के मेयर आफताब पोरूवल को दी है। उन्होंने मल्टी मिलियन डॉलर का कैंपेन जस्टिस यूनाइट्स अस लॉन्च किया है। आफताब कहते हैं कि हम घर-घर जा रहे हैं। भारतीय आबादी के इर्द-गिर्द रेस्त्रां, किराने की दुकानों जैसे छोटे-छोटे बिजनेस हाउस में कार्यक्रम रख रहे हैं। ◆◆◆

शर्म की बात है कि कई बॉलीवुड एक्टर्स को नहीं आती हिंदी

बॉलीवुड सिंगर सोना महापात्रा ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि ये शर्म की बात है कि कई बॉलीवुड सेलेब्स को हिंदी नहीं आती है। सोना ने एक्टर्स पर तंज कसते हुए कहा कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में काम करने के बावजूद कई एक्टर्स प्रॉपर हिंदी बोलने में भी स्ट्रगल कर रहे हैं। साथ ही सोना ने इंडियन कल्चर अपनाने के लिए साउथ सिनेमा की तारीफ भी की है। सोना महापात्रा आमिर खान के साथ ट्रेंड ब्रेकिंग टॉक शो सत्यमेव जयते से स्पॉटलाइट में आईं थीं।

शर्म की बात है, कई बॉलीवुड स्टार्स नहीं बोल पाते हिंदी

एक इंटरव्यू के दौरान जब सोना महापात्रा से हिंदी भाषा डिबेट पर कमेंट करने को कहा गया, तो सिंगर ने कहा, हालांकि बॉलीवुड में हमारे पास कई बेहतरीन स्टार्स हैं, मुझे ये कहना होगा कि, ऐसे भी कई एक्टर्स हैं, जो बमुश्किल हिंदी बोल सकते हैं। ये शर्म की बात है कि हिंदी फिल्मों में काम करने के बावजूद एक्टर्स हिंदी नहीं बोल पाते, जबकी उनकी भाषा में फ्लुएंसी होनी चाहिए। साउथ की फिल्मों की बात करें तो वहां के इंडियन एस्थेटिक्स बेहद स्ट्रांग हैं।

सोना ने की साउथ इंडस्ट्री की तारीफ

बातचीत के दौरान सोना ने साउथ की फिल्मों की तारीफ करते हुए कहा, "मैं एक बात कह सकती हूं कि मैनें RRR और पुष्पा देखी और मैं सचमुच में खुशी से उछल कूद रही थी, शायद अनकम्फर्टेबल फील कर रही थी। ये फिल्में देखकर मेरा सिर्फ एक ही रिएक्शन था, हैट्स ऑफ! एफर्ट, आर्ट डिजाइन और कास्टिंग सब कमाल के थे। उन्हें अपना कल्चर अपनाते हुए देख कर बहुत अच्छा लगा।

क्या है हिंदी-साउथ डिबेट ?

कन्नड़ और तेलुगु ब्लॉकबस्टर KGF और RRR के इस साल बॉलीवुड से बहुत आगे निकल जाने के बाद, साउथ इंडस्ट्री और बॉलीवुड में बहस छिड़ गई थी। साउथ एक्टर किच्चा सुदीप के इस बहस में कदम रखते ही इस डिबेट ने सीरियस मोड़ ले लिया था। सुदीप ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि साउथ इंडस्ट्री की हालिया हिट फिल्मों के बाद हिंदी को अब नेशनल लैंग्वेज नहीं कहा जा सकता है, जिसके बाद अजय देवगन ने पोस्ट किया और सुदीप से पूछा कि वह अपनी फिल्मों को हिंदी में डब क्यों करते हैं। इसके बाद सुदीप ने ये सफाई देते हुए कहा कि उनका बयान किसी बहस को भड़काने के लिए नहीं था। बता दें कि, सोना महापात्रा की डॉक्यूमेंट्री शट अप सोना 1 जुलाई से ZEE पर स्ट्रीम होगी। इसे दीप्ति गुप्ता ने डायरेक्ट किया है। सिंगर इन दिनों प्लेबैक सिंगिंग से ज्यादा लाइव शोज कर रही हैं।

◆◆◆

www.saiworldcity.co.in

SAI WORLD CITY PANVEL

A WORLD WITH EVERYTHING WITHIN

JUST 5 MINS. FROM NAVI MUMBAI INTERNATIONAL AIRPORT

MAHARERA REGISTRATION NO.: PHASE 1 - P52000006318 I PHASE 2 - P52000022708 (https://maharera.mahaonline.gov.in)

Artist's Impression

PROJECT HALLMARKS

- 32 Acre Mega Township
- G+33 Storeyed Tower
- 2, 2.5, 3 & 4 BHK Luxury Homes
- Themed Landscaping
- International Lifestyle

MAHARERA REGISTRATION NO. PHASE I - P51700002446
PHASE III - P52000029168 | https://maharera.mahaonline.gov.in

Artist's Impression

AN EMPIRE FOR MODERN DAY KINGS AND QUEENS

PROJECT HALLMARKS

- 18 Acre Kingdom
- G+40 Storeyed Tower
- 2, 3 & 4 BHK Luxury Homes
- Commercial Mall with G+2 storeys
- Designer Podium Garden
- Athena Clubhouse

2783 1000 | Email: enquiry@paradisegroup.co.in | www.paradisegroup.co.in

Site & Sales Office: Sai World Empire, Opp. Kharghar Valley Shilp (CIDCO Colony), Kharghar

Site & Sales Office: Sai World City, Palaspe Phata Junction, Panvel - 410 206.

Follow us on:

PARADISE® GROUP
Your World. Our Vision.
ISO - 9001: 2015 Certified Organization

TITELNO. MAHHINO7214/13/A2009-TC ■ REGISTRATION NO : MAHHIN/2009/30744
BY OFFICE THE REGISTRAR OF NEWS PAPERS FOR INDIA,
MINISTRY OF INFORMATION & BRODCASTING, GOVT.OF INDIA

हम सब की है यही पुकार । हरा-भरा हो यह संसार ।।

जनहित में प्रकाशित